ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 09 अगस्त 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 09 अगस्त 2015 से 15 अगस्त 2015

श्रावण.कृ. 10 ● वि० सं०–2072 ● वर्ष 58, अंक 32, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,116 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

गोपीचन्द आर्य महिला कॉलेज अबोहर में नवसत्रारम्भ पर हुआ यज्ञ का आयोजन

गोपीचन्द आर्य महिला कॉलेज अबोहर में नवसत्रारंभ भव्य हवन–यज्ञ द्वारा किया गया। इस आयोजन में छात्राओं को शुभाशीष देने व सेठ गोपीचन्द जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए वैदिक कन्या गुरूकुल फती (गंगानगर राजस्थान) से परम श्रद्धेय स्वामी सुखानन्द जी पधारे। सर्वप्रथम गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी छात्राओं ने संगीतमय अर्थ सहित सुमधुर वेद–पाठ किया। तदन्तर धर्मशिक्षक श्री अशोक शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुए हवन–यज्ञ में वैदिक मंत्रोच्चार करते हुए सबने श्रद्धा एवं भक्ति सहित प्रात:कालीन आहुतियां प्रदान की। यज्ञ में मुख्य मजमान की भूमिका पंजाब विश्वविद्यालय में टॉप करने वाली कॉलेज की छात्रा कुमार शिफाली छाबड़ा तथा यूनिवर्सिटी व बोर्ड की मेरिट लिस्ट में स्थान पाने वाली छात्राओं कु. प्रिया, सिमरन, शीनम, अंजु व रजनी छाबड़ा ने निभाई।

चेयरमैन श्री देवमित्र जी आहुजा ने शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने वाली इन छात्राओं को पुरस्कृत किया व शीर्ष स्थान पर रहने वाली शिफ़ाली को वरिष्ठ एल.ए.सी. सदस्य श्री परमानन्द जी आहुजा द्वारा प्रदत्त 5000/– रूपये की प्रोत्साहन राशि भेंट की। वैदिक मनीषी स्वामी सुखानन्द जी ने आहुजा परिवार के योगदान को रेखांकित करते हुए छात्राओं को अपने भीतर देशभक्ति, मातृ–पितृभक्ति व गुरुजनों का सम्मान आदि सुगुणों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्राचार्या डॉ. नीलम अरुण मित्तु ने अपने वक्तव्य में अकादमिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए सब अतिथियों का अभिनन्दन एवं आभार प्रदर्शन कर अपने स्नेह भरे आशीर्वाद में अन्य छात्राओं को पुरस्कार ग्रहण करने वाली छात्राओं से प्रेरणा लेने का आह्वान कर उनके व उन्नत तथा स्वार्णिम भविष्य की शुभाशीष दी।

आर्य जगत् के पाठकों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

'आर्य जगत्' अपने सभी सुधी पाठकों को स्वतंत्रता दिवस के इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता है। हमारा देश स्वतंत्रता के एक नए वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। स्वतंत्रता दिवस के इस उल्लास में हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए स्वराज्य और स्वाधीनता के रूप को ध्यान में रखना आवश्यक है। आइए महर्षि दयानन्द के दिखाए हुए वेदों के मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता का उपभोग करते हुए नित नवीन ऊँचाइयों को छूने का प्रयास करें। –सम्पादक

डी.ए.वी आलमपुर में 'आर्य युवा समाज' द्वारा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन हुआ

डी.ए.वी विद्यालय आलमपुर में आर्य युवा समाज' द्वारा नैतिक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में विशेष रुप से महात्मा चैतन्य मुनि द्वारा वैदिक सस्कारों से अवगत करवाया गया इस शिविर का आरम्भ प्रातः 8 बजे योगाभ्यास से किया गया। इसके पश्चात मुनि जी द्वारा वैदिक हवन करवाया गया व बच्चों ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में मुनि जी ने डी.ए.वी के इतिहास व वैदिक मूल्यों पर परिचर्चा की। जिसमें विद्यार्थियों ने अपने कई प्रश्नों के उत्तरों का समाधान मुनि जी से प्राप्त किया। शिविर के समापन पर क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती पी. सोफत, प्रधानाचार्य पालमपुर श्री वी. के. यादव, कांगड़ा केन्द्रीय सहकारी बैंक सीमित के अध्यक्ष श्री जगदीश सिपहिया, स्थानीय समिति के सदस्य व अन्य गणमान्य अतिथिगणों ने विशेष रूप से उपस्थित होकर कार्यक्रम की ओभा बढ़ाई। बाल आश्रम सुजानपुर के विद्यार्थियों को पुस्तकें व कॉपियां दी गई। विद्यार्थियों द्वारा दयानन्द कि जीवनी पर आधारित नाटिका भी प्रस्तुत की गई व अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। महात्मा चैतन्य मुनि ने अपने आर्शीवचनों से अनुगृहीत करते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में वैदिक मूल्यों को अपनाना चाहिए। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री बिक्रम सिंह जी ने विद्यार्थियों को महात्मा जी द्वारा बताए गए नैतिक मूल्यों व वैदिक संस्कारों को अपने जीवन में ग्रहण करने का आह्वान किया व आये हुए समस्त अतिथिगणों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया।

आर्य युवा समाज एम.आर.ए.डी.ए.वी. ने सोलन के चिल्ड्रन पार्क में किया भजन-संध्या का आयोजन

एम.आर.ए.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन हि.प्र. के आर्य युवा समाज के तत्वाधान में दिनांक 8 जुलाई बुधवार को सोलन नगर में स्थित सार्वजनिक वाटिका चिल्डर्न पार्क में विराट् भजन संध्या का भव्य आयोजन किया गया। स्कूल की प्राचार्य एवं आर्य युवा समाज की प्रधान श्रीमती अनुपमा शर्मा के मार्गदर्शन व दिशा–निर्देश में आयोजित इस कार्यक्रम में काफी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित रहे। स्थानीय चिल्डर्न पार्क में आयोजित इस भजन संध्या का शुभारम्भ सायं 6 बजे ओ३म् ध्वनि के उच्चारण के साथ ध्यान सत्र के साथ किया गया। उसके पश्चात् अर्थ सहित गायत्री मंत्र तथा ईश्वर–स्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों का सस्वर उच्चारण किया गया। तत्पश्चात् विभिन्न वैदिक भजनों का अत्यन्त भक्तिमय वातावरण में गान किया गया। कार्यक्रम का समापन शन्ति पाठ के साथ किया गया। स्थानीय लोगों ने भी इसमें बढ़–चढ़ कर भाग लेते हुए वैदिक भजनों का आनन्द लिया। उन्होंने सोलन शहर के मध्य केन्द में इस प्रकार के शुभ आयोजन के लिए प्राचार्या श्रीमती अनुपमा को हार्दिक बधाई दी और कहा कि इस आयोजन का समाज मै सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

कार्यक्रम के समापन के अवसर पर प्रधानाचार्य बताया कि प्रति सप्ताह प्रत्येक बुधवार को आर्य युवा समाज के तत्वाधान में भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा जिससे 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि प्रश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्'। के संदेश सार्थक बनाया जा सकें। उन्होंने कहा कि, आर्य युवा समाज इस प्रकार के सामाजिक कार्यों में सक्रियता से भाग लेता है क्योंकि आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य ही संसार का उपकार करना है। उन्होंने स्थानीय लोगों से भी इसमें और अधिक संख्या में बढ़–चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. 1

संपादक – पूनम सूरी

आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 09 अगस्त, 2015 से 15 अगस्त, 2015

दम्पती का कर्तव्य

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

प्राचीं प्राचीं प्रदिशमारभेथाम्, एतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते।
यद् वां पक्वं परिविष्टमग्नौ, तस्य गुप्तये दंपती संश्रयेथाम्।।

अथर्व 12.3.7

ऋषिः यमः। देवता स्वर्गः, ओदनः, अग्निः। छन्दः त्रिष्टुप्।

● **(दंपती)** हे पति–पत्नी! [तुम दोनों] **(प्राचीं प्राचीं प्रदिशं)** अगली–अगली प्रकृष्ट दिशा को **(आरभेथां)** ग्रहण करो। **(एतं लोकं)** इस गृहस्थ आश्रम को **(श्रद्–दधानाः)** श्रद्धावान् लोग **(सचन्ते)** प्राप्त करते हैं। **(वां)** तुम दोनों की **(यत्)** जो [वस्तु] **(अग्नौ)** अग्नि में **(परिविष्टं)** डाली जाकर **(पक्वं)** परिपक्व हो गई है **(तस्य)** उसके **(गुप्तये)** रक्षण के लिए **(संश्रयेथाम्)** एक–दूसरे का आश्रय लो।

● हे वर–वधू! तुम परस्पर विवाह–सूत्र में परिणद्ध हुए हो। पर क्या तुम गृहस्थाश्रम का उत्तरदरयित्व और कर्तव्य भी जानते हो? यह आश्रम श्रद्धावानों का आश्रम है, पति और पत्नी की आपस में एक–दूसरे के प्रति श्रद्धा और दोनों की मिलकर भगवान् में श्रद्धा जब होती है तब इस आश्रम का प्रसाद फलीभूत होता है। श्रद्धा में समर्पण का भाव जुड़ा हुआ है। पति–पत्नी एक–दूसरे को आत्म–समर्पण करते हैं और दोनों मिलकर परम प्रभु को आत्म–समर्पण करते हैं। श्रद्धा और समर्पण कितने पवित्र शब्द हैं! गृहस्थ दम्पती यदि इन शब्दों का *मर्म समझकर आचरण करें*, तो उनका गृहस्थाश्रम सौरभ बखेरने लगता है।

हे दम्पती! तुम दोनों आगे–आगे की प्रकृष्ट दिशा की ओर बढ़ते चले जाओ। तुम ब्रह्मचर्याश्रम की साधना कर चुके हो। इस बात को मत भूलो कि यह गृहस्थाश्रम भी साधना का ही आश्रम है। साधना करनेवाले ही आगे बढ़ते हैं और वस्तुतः आगे पग बढ़ाना भी एक साधना ही है। निरुद्देश्य विलासमय गृहस्थ जीवन साधना–हीनों का होता है। यदि तुम गृहाश्रम में विलास और साधना को एकाकार कर सकोगे, तो निश्चय ही तुम्हारा गृहाश्रम विकास का सोपान बन सकेगा।

गृहस्थाश्रम में पति–पत्नी अग्नि प्रज्वलित करते हैं, आहिताग्नि बनते हैं। अपना सब–कुछ उन्हें उस अग्नि में परिपक्व करना होता है। अपना तन, अपना मन, अपना धन, अपना आत्मा, अपने कार्य, सबको परिपक्व करना होता है। जो परिपक्व हो गया है, उसकी सुरक्षा करनी है और जो परिपक्व नहीं हुआ है उसे परिपक्व करनें में तीव्रता से तत्पर होना है। यह परिपक्वता ही गृहस्थाश्रम की देन है। पर यह परिपक्वता भी अकेले–अकेले नहीं होती, पति–पत्नी मिलकर ही परिपक्वता सम्पादित करते हैं और मिलकर ही परिपक्व की रक्षा करने में समर्थ होते हैं।

हे गृहस्थ–जनो! स्मरण रखो, गृहस्थाश्रम श्रद्धा का, आगे–आगे बढ़ने का और परिपक्व होने का आश्रम है। अतः इस आश्रम की नींव में और इस आश्रम पर बने भवन में इन तीनों को सदा सिंचित करते रहो। तुम्हारा मंगल होगा।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

महामन्त्र

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि गायत्री–उपासना का प्रयोजन है– गायत्री मन्त्र द्वारा उपासना। इस मन्त्र द्वारा साधना करने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। साधना करते हुए अष्टांग योग के पहले दो अगों (यम तथा नियम) को अपने जीवन का सुन्दर अंग बना लिया जाये।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर–प्रणिधान– ये दसों यदि साधक के जीवन में आ सकें तो गायत्री मन्त्र द्वारा साधना सफल हो सकती है।

मानव जीवन के दो स्तर हैं – एक भौतिक, दूसरा आध्यात्मिक अर्थात् एक बाह्य जीवन और एक आन्तरिक जीवन का मूल है। प्रकृति से लाभ उठाते हुए इसे केवल साधन मात्र बनाकर मनुष्य को परमात्मा तक पहुंचना है। उत्कट इच्छा तभी होती है जब साधक के अन्दर विश्वास ओर श्रद्धा हो। उत्कट इच्छा होने पर ही साधना में प्रवृत्त हुआ जा सकता है। उपासक जब गायत्री मन्त्र द्वारा उपासना करने लगे तो उसे पूर्ण श्रद्धा विश्वास के साथ उत्कट इच्छा से उपासना करनी होगी।

.....अब आगे।

गायत्री–जप कैसे करें –

यम–नियम, विश्वास, श्रद्धा तथा उत्कट इच्छा से उपासक रँग गया तो गायत्री–जप से पूर्व इस महामन्त्र के अर्थ भी हृदयंगम कर लेने आवश्यक हैं। कुछ विस्तार से गायत्री–मन्त्र के शब्दों के अर्थ लिखे जा चुके हैं, परन्तु जप के लिए अर्थ इतने संक्षिप्त होने चाहिएं कि वे शब्दों के साथ–साथ भावना–रूप में आते रहें। इसीलिए यहाँ संक्षेप में वे अर्थ लिखे जाते हैं –

'हे रक्षक! प्राणाधार! दुःखों के दूर करने वाले सुखदाता! तेरे वरणे–ग्रहण करने योग्य, पापनाशक तेज का ध्यान धरते हैं, जो आनन्द का देनेवाला और जन्मदाता है। हमारे बुद्धि–कर्म को शुभ प्रेरणा करो, अपनी ओर ले चलो।'

यह संक्षिप्त भावार्थ हृदय में बिठला लेना चाहिये। तब शुद्ध–पवित्र होकर, स्वस्थ आसन पर बैठकर यह विचार करना चाहिए कि मैं इस समय माता की गोदी में जा रहा हूँ या जा रही हूँ। ग्रीवा, पीठ सीधी रखकर ध्यान भृकुटि अथवा हृदय–प्रदेश में रखना चाहिए।

सत्त्वगुण प्रधान कर लो–

गायत्री–जप प्रारम्भ करने से पूर्व अपने शरीर तथा मन में सत्त्वगुण प्रधान कर लेना चाहिए। यदि सत्त्वगुण प्रधान न हो तो मन की चंचलता अधिक रहती है और चित्तवृत्ति भटकती रहती है। सत्त्वगुण प्रधान करने की विधि यह है– अपनी दोनों नासिकाओं के आगे हाथ रखकर श्वास को ज़ोर से बाहर फेंको और देखो कि किस नासिका से अधिक बल से श्वास निकला है। यदि सूर्यस्वर (दाईं नासिका) से श्वास ज़ोर से निकला है तो समझो कि रजोगुण और तमोगुण दोनों कार्य कर रहे हैं। सूर्यस्वर में चित्त अधिक चंचल रहता है, अतएव सूर्यस्वर के स्थान पर चन्द्रस्वर (बाएँ) को चलाना होगा। बाएँ हाथ की मुट्ठी बन्द करके (कुक्षि) में रखकर ज़ोर से दबाओ, एक–दो मिनट ही में सूर्यस्वर बन्द होकर चन्द्रस्वर चलने लगेगा। सीधे बैठ जाइये और दस से बीस तक लम्बे–लम्बे श्वास लीजिये। ये श्वास धीरे–धीरे लीजिये, तब चन्द्र तथा सूर्यस्वर सम हो जाएँगे। समस्वर में सत्त्वगुण प्रधान होता है; रजोगुण तमोगुण दब जाते हैं। सत्त्वगुण प्रधान होने पर गायत्री–मन्त्र का थोड़े–से धीमे–धीमे स्वर में उच्चारण कीजिये। तीन बार ऐसा करके मन्त्र का मानसिक जप प्रारम्भ कर दीजिये।

ध्यानावस्थित –

जप करते हुए जब आधा घण्टा या एक घण्टा व्यतीत हो जाये तो जप छोड़ दीजिये और भृकुटि में यह धारणा कीजिये कि यहाँ दीपशिखावत् या चन्द्रवत् कोई ज्योति है। बार–बार ऐसी धारणा करने से थोड़े दिनों या सप्ताहों या महीनों के पश्चात् यह ज्योति अन्दर की आँखों से दिखाई देने लगती है। समय कितना लगेगा, यह तो अपने चित्त की अवस्था पर निर्भर है। जितनी अधिक निर्मलता होगी, उतनी ही शीघ्रता से ज्योति दीखने लगेगी। कुछ साधकों को ज्योति दिखलाई नहीं देती और उसके स्थान में भृकुटि में खिंचावट–सी, सनसनाहट–सी प्रतीत होने लगती है। यह चिह्न भी अच्छा है।

इससे समझ लेना चाहिए कि सूक्ष्म प्राण की गति वहाँ होने लगी है, और ज्यों–ज्यों भृकुटि की विशेष नाड़ी ध्यान से शुद्ध होती जाएगी, यह सूक्ष्म प्राण ललाट–चक्र और फिर ब्रह्मरन्ध्र में चला जाएगा। सूक्ष्म प्राण की गति के साथ चित्त भी वहीं बाँधा जाएगा। इस प्रकार प्रतिदिन कम–से–कम एक घण्टा अवश्य धारणा, ध्यान कर लेने चाहिएँ। यदि अधिक समय दिया जा सके तो लाभ अधिक होगा।

निरन्तर ध्यानावस्थित होने का अभ्यास करने से और ज्योति अथवा सनसनाहट को अनुभव करने से बुद्धि की मलिनता दूर होने लगती है। ज्योति जितनी शुभ्र, अथवा सनसनाहट जितनी तीव्र होती जाएगी, निर्मलता, पवित्रता भी उतनी मात्रा में बढ़ती जाएगी, क्योंकि अनुभव यह बतलाता है कि परमात्मा का पापनाशक, अतिश्रेष्ठ तेज का ध्यान करने से बुद्धि की मलिनता दूर होती जाती है और उसके स्थान में निर्मलता और पवित्रता आती जाती है।

स्थान का प्रभाव –

गायत्री–जप के लिए स्थान भी स्वच्छ और सुन्दर होना चाहिए, क्योंकि स्थान भी चित्तवृत्ति–निरोध में सहायक होता है। महर्षि दयानन्द ने भी 'सत्यार्थ–प्रकाश' के एकादश समुल्लास में लिखा है– "उत्तरकाशी आदि स्थान ध्यानियों के लिए अच्छे हैं। केदारनाथ का स्थान वह भूमि बहुत अच्छी है" बद्रीनारायण के सम्बन्ध में वे आदेश देते हैं– ''वहाँ की भूमि बड़ी रमणीय और पवित्र है।"

वेद भगवान् ने स्वयं यह आदेश दिया है –

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत।। ऋ. 8।6।28।।

– पर्वतों की कन्दराओं में और नदियों के संगम पर ध्यान करने से बुद्धि तीव्र हो जाती है।

यदि पहाड़ की कन्दरा अथवा नदियों को संगम–स्थान या नदी–तट न मिले तो किसी झील, स्रोत अथवा ताल के किनारे, या किसी रम्य वाटिका में जप करना चाहिए। ऐसा स्थान भी प्राप्त न हो तो फिर अपने गृह के किसी एकान्त कोने या कमरे में आसन बिछाकर वहाँ धूप, अगरबत्ती या चन्दन जलाना चाहिए। इस स्थान को स्वयं साफ करना चाहिए, और ऐसे स्थान पर यह भावना लेकर जाना तथा बैठना चाहिए कि मैं प्रभु–मन्दिर में आ गया हूँ या आ गई हूँ।

स्थान यदि स्वच्छ न होगा तो मन में अधिक प्रसन्नता नहीं आ सकेगी। शराब की दुकान में बैठकर प्रभु–भजन करने को चित्त नहीं चाहता, परन्तु स्वच्छ मन्दिर में भजन के लिए बैठने को स्वयमेव चित्त तैयार हो जाता है। चित्तवृत्ति–निरोध में सहायक होने के कारण ही तपस्वी लोग उत्तराखण्ड के पर्वतों, वनों तथा सरोवर के तट पर कुटिया बनाते थे, ताकि सफलता शीघ्र हो सके। परन्तु सब लोग ऐसा नहीं कर सकते, अतएव उन्हें अपने ही गृह में ऐसा वातावरण बना लेना चाहिए और वर्ष में एक–दो बार, दस–पन्द्रह दिन या महीना–भर के लिए किसी एकान्त वन में जाकर गायत्री–जप तथा ध्यानावस्थित होने के लिए अभ्यास करना चाहिए।

गायत्री द्वारा बुद्धि तथा हृदय पर प्रभाव –

इस महामन्त्र के 24 अक्षरों का संगठन इतना अद्भुत है कि इसके मानसिक जप अथवा वाणी द्वारा उच्चारण करने से विशेष दिव्य तरंगें उठती हैं जो बुद्धि–मण्डल, मूलाधार चक्र तथा अन्य मस्थलों पर जाकर चोट लगाती हैं। जिस प्रकार वीणा के तार छेड़ने से अद्भुत मधुर स्वर सुनाई पड़ते हैं, गायत्री–मन्त्र का जाप किया जाता है तो इसके शब्दों के मौन अथवा उपांशु उच्चारण से भी भीतर–ही–भीतर तरंगें उठने लगती हैं, जो इन मण्डलों पर एक अलौकिक वैज्ञानिक प्रभाव डालती हैं। यह इतनी सूक्ष्म क्रिया है कि इसे पूरे सावधान तथा समाहित चित्तवाले साधक ही अनुभव कर सकते हैं। परन्तु यह अनुभव–सिद्ध है कि गायत्री–जप तथा तदनुकूल आचरण बनाने से साधक का हृदय कमल–सा खिलने लगता है। उसे जीवन में कुछ माधुर्य प्रतीत होने लग जाता है और जगत् के कार्य फिर अधिक घबराहट उत्पन्न नहीं करते।

यह कहना तो अत्युक्ति होगी कि सांसारिक कष्ट तथा चिन्ताएँ आती नहीं। आती तो हैं। बड़े–बड़े योगियों, तपस्वी महानुभावों पर भी आपत्तियाँ आती हैं, परन्तु गायत्री–उपासक या साधक की बुद्धि तथा हृदय इस प्रकार का बनने लगता है कि आपत्ति आने पर भी शान्त रहता है। साधक तथा असाधक, भक्त तथा अभक्त में यही भेद है। महर्षि दयानन्द ने–

"वृत्तिसारूप्यमितरत्र"।। योग. 1।4।।

सूत्र की व्याख्या करते हुए 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' में लिखा है –

"उपासक योगी और संसारी मनुष्य जब व्यवहार में प्रवृत्त होते हैं, तब योगी की वृत्ति तो सदा हर्ष–शोक–रहित, आनन्द से प्रकाशित होकर उत्साह और आनन्दयुक्त रहती है, और संसार के मनुष्य की वृत्ति सदा हर्ष–शोकरूप दुःख–संसार में ही डूबी रहती है।"

और गायत्री–जप ऐसी वृत्ति बनाने में बड़ा सहायक बनता है। चौबीस अक्षरों से गायत्री के जो शब्द बने हैं उनके उच्चारण से ऐसी तरंगें उठती हैं जो शरीर के मर्मस्थलों पर दिव्य प्रभाव डालती हैं। विशेष रूप से बुद्धि और हृदय पर जब निरन्तर प्रतिदिन यह क्रिया जारी रहती है तो बुद्धि का मोटापन दूर होने लगता है और वह तीक्ष्ण बनने लगती है। मनोविज्ञान के पण्डितों ने भी अब यह स्वीकार कर लिया है कि एक ही प्रकार के शब्द तथा विचार के बार–बार दुहराने, जप करने से मन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है और वह बार–बार दुहराया विचार उसके जीवन में ओतप्रोत होने लगता है, जिससे हृदय तथा बुद्धि, दोनों की मलिनता परे हटाने में पूरी सहायता मिलती है।

बुद्धि की मलिनता दूर होने पर धन कमाने, सांसारिक वैभव प्राप्त करने और दूसरों से व्यवहार करने की कुशलता प्राप्त हो जाती है, और निर्मल बुद्धि द्वारा ही आत्मदर्शन भी प्राप्त हो जाता है। गायत्री–मन्त्र में परमात्मा से एक ही याचना की गई है कि हमारी बुद्धि को प्रेरित कीजिये कि वह आपकी ही ओर झुके, शुभ तथा आध्यात्मिक रुचिवाली हो, आपका ही गुण–गान करनेवाली और आपके ही प्रेम–भक्ति के रंग में रँग जाये।

संसार में बुद्धि ही सर्वप्रधान है; मनुष्य पर मनुष्य की विशेषता बुद्धि ही के कारण होती है। तुलसीदास जी ने ठीक कहा है –

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।।

और 'महाभारत' में जहाँ यह प्रसंग आता है कि देवता किस प्रकार साधक की रक्षा करते हैं और किस प्रकार कुकर्मी को दण्ड देते हैं, वहाँ यह भी बतलाया है –

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या तु विभजन्ति तम्।।
यस्मै देवाः प्रयच्छन्ति पुरुषाय पराभवम्।
बुद्धिं तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति।।
उद्योग पर्व 34।80, 81।।

– देवता दंड लेकर पशु–रक्षक की भाँति पुरुष की रक्षा नहीं करते। वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसे बुद्धि दे देते हैं, और जिसे असफल बनाना चाहते हैं उसकी बुद्धि पहले छीन लेते हैं।

'गीता' में भी तो यही कहा है –

"बुद्धिनाशात्प्रणश्यगीति।" 2।63।।

– बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश हो जाता है।

चाणक्य ऋषि ने यह कहते हुए कि शेष चाहे सब–कुछ चला जाए परन्तु –

"बुद्धिस्तु मा गान्मम।"

–मेरी बुद्धि न जाये–ऐसी याचना की थी। और फिर जिसके पास दिव्य बुद्धि है, उसके तो लोक–परलोक दोनों सुधर जाते हैं। वह वेदानुसार (अभिष्टये) मनोवांछित आनन्द तथा (पीतये) पूर्ण परमानन्द को प्राप्त कर लेता है।

यहाँ एक शंका का समाधान आवश्यक है कि अमरीका, यूरोप आदि में तो कोई गायत्री–जप तथा तदनुकूल आचरण नहीं करता, क्या वहाँ बुद्धि नहीं है?

बुद्धि तो है, परन्तु सुबुद्धि, दिव्य बुद्धि, सात्त्विकी बुद्धि नहीं है। यदि सुबुद्धि होती तो इतने वैभवशाली देश में होने पर भी वे दुःखी न होते; और सात्त्विक बुद्धि वही है जो प्रभुभक्ति के रंग में रँगी जा चुकी है। ऐसी सुबुद्धिवाला मनुष्य कोई ऐसा कर्म नहीं करता जिससे जनता दुःखी हो उठे। भगवान् कृष्ण इसके सम्बन्ध में यह कहते हैं –

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।
गीता 2।66।।

–साधन–रहित पुरुष के अन्तःकरण में श्रेष्ठ बुद्धि नहीं होती है और अयुक्त (प्रभु से विमुख) के अन्तःकरण में आस्तिक भाव भी नहीं होता है, और बिना आस्तिक–भाववाले पुरुष को शान्ति भी नहीं होती। फिर शान्ति–रहित पुरुष को सुख कैसे हो सकता है?

गायत्री–मन्त्र द्वारा जो बुद्धि मिलती है वह श्रेष्ठ बुद्धि है और आस्तिकता से सनी होने के कारण ठीक पथ–प्रदर्शन करती है। तब साधक के लोक–परलोक दोनों सुधर जाते हैं।

शेष अगले अंक में....

यज्ञीय सूक्तियां

1. **सत्याः सन्तु नः आशिषः ।।** यजु. 2/10
   हमारे आशीर्वचन सत्य हों।
2. **सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।** यजु.12/44
   यजमान की सभी कामनाएं पूर्ण हों।
3. **समिधाग्निं दुवस्यत।।** यजु. 12/30
   समिधा के द्वारा अग्नि को प्रज्वलित करो।
4. **श्रद्धयाग्निः समिध्यते।।** ऋ 10/151/1
   श्रद्धा से ही अग्नि प्रज्वलित होती है।
5. **शुद्धाः पूताः भवत यज्ञियासः।।** यजु.
   यज्ञसिद्धि हेतु यजमान शुद्ध पवित्र हों।
6. **अग्निं घृतैर्बोधयत।।** यजु. 12/30
   घी की आहुतियों से अग्नि को जागृत करो।

संग्रह कर्ताः
पं वेद प्रकाश शास्त्री
4–ई–कैलाश नगर फाजिलका

67वें स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष–

योगक्षेमो नः कल्पताम्

● प्रो. ओमकुमार आर्य

उपर्युक्त मंत्रांश यजुर्वेद 22/22 के उस प्रसिद्ध मंत्र से उद्धृत किया गया है जो हमारी वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना है। वैदिक राष्ट्र गान है। इस पूरे मन्त्र का काव्यानुवाद करते हुए उक्त अंश का बहुत सुन्दर भावानुवाद यूँ किया गया है कि –

हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।

यहाँ 'योग' शब्द अध्यात्म का पुट लिये हुए है कि हम आध्यात्मिक रूप में भी सुखी हों, सम्पन्न हों और 'क्षेम' अर्थात् सभी प्रकार की भौतिक सुख–सम्पदा, सुरक्षादि भी हमें सदैव प्राप्त रहे। वेद का राष्ट्र–विषयक चिंतन, राष्ट्र संबंधी अवधारणा, परिकल्पना एकांगी न होकर समग्र और सर्वांगी है। वैदिक राष्ट्रवाद के अंतर्गत प्रजाजनों के लिए मात्र रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता ही नहीं की गई प्रत्युत उनके लिए धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास और उन्नति की भी समुचित व्यवस्था की गई है। वेद राष्ट्र को मात्र एक प्रभुतासंपन्न भौगोलिक इकाई ही नहीं मानता, इसके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ राष्ट्र की वैदिक अवधारणा में है, वेद द्वारा प्रतिपादित 'राष्ट्रवाद' की परिकल्पना में है।

वैदिक धर्म में राष्ट्र, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय भावना आदि को इतना महत्त्व दिया गया है कि वैदिक मान्यताओं के अनुसार चलने वाला व्यक्ति कभी भी राष्ट्र विरोधी कोई कुकृत्य कर ही नहीं सकता। वैदिक राष्ट्रवाद की जड़ें बहुत गहरी हैं, आज का स्वार्थान्ध, सत्तालोलुप, तथाकथित सैक्युलरवाद की दलदल में धंसा राजनेता (?) वोट बैंक की घटिया राजनीति करने वाला कोई भी दल कभी कल्पना भी नहीं कर सकता कि वेद का राष्ट्रवाद कितना उदात्त, कितना पवित्र, कितना उदार और 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भावना से परिपूर्ण हो सकता है। इसलिए यह अत्यंत सहज और स्वाभाविक ही है कि वैदिक विचारधारा मातृभूमि के प्रति अगाध आदर एवं आस्था तथा सार्वजनिक हित की भावना से पूरी तरह ओतप्रोत है। **'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'** की पावन भावना अन्यत्र दुर्लभ है।

आज अपने 67वें स्वतन्त्रता दिवस के शुभावसर पर ये सब बातें अन्य देशवासियों और विशेषकर नई पीढ़ी को बताना नितान्त आवश्यक है। 'योगक्षेमो नः कल्पताम्' अर्थात् हमारी स्वाधीनता चिरस्थायी हो, हमारी सुरक्षा को कभी कोई आंच न आवे, सभी प्रजाजन परस्पर प्रेमभाव से रहें, फूलें फलें, ज्ञान विज्ञान में हम उन्नत होवें, दिग्दिगन्त में हमारी यश–दुन्दुभि बजती रहे आदि–आदि, यही वैदिक राष्ट्रवाद है, यही आदर्श राम राज्य है।

'योगक्षेमो नः कल्पताम्' अर्थात् हमारी स्वाधीनता हम सबके लिए सुखदायी हो, यह कामना तो वैदिक राष्ट्रवाद का मात्र एक आयाम है, इसके अतिरिक्त इस पूरी राष्ट्रीय प्रार्थना में (यजुः 22/22) अनेक अन्य ऐसी कामनायें हैं जो राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग के प्रजाजनों, हमारे पशुओं, फल फूल औषधियों (समस्त पर्यावरण), आवश्यकतानुसार वृष्टि आदि से संबंधित हैं, अर्थात् सबकी समान सर्वांगीण उन्नति, विकास, हित–संपादन वैदिक राष्ट्रवाद की मूल भावना है जो वर्तमान में विलुप्त प्रायः होती जा रही है जो कि राष्ट्रवासियों के लिए एक बेहद दुःखद एवं अशुभ संकेत है।

वैदिक राष्ट्रवाद को ठीक से समझना हो तो हमें अथर्ववेद का 'पृथिवी/भूमि सूक्त' बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिये, जो कि 'द्वादश काण्ड' का प्रथम सूक्त है जिसमें 63 मंत्र हैं। दूसरे शब्दो में 'अथर्व 12/1 मंत्र 1–63' राष्ट्रवाद को डिंडिम–घोष कहा जा सकता है। आज के संदर्भ में तो उक्त वैदिक सूक्त अत्याधिक प्रासंगिक है क्योंकि आज हम सुरक्षा के बाहरी एवं भीतरी खतरों से जूझ रहे हैं, भ्रष्टाचार एक भयंकर राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है, घपले, घोटाले, स्कैण्डल, काण्ड ये सब रोज–रोज की बातें हो गई हैं, क्षेत्रवाद, जातिवाद, अलगाववाद आदि की दुष्प्रवृत्ति इतनी प्रबल और बेकाबू हो चुकी है कि हमारा अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। इन सबका और इन जैसी अन्य सभी समस्याओं का समाधान यदि कहीं है तो वेद में है, वेद द्वारा बताये गये राष्ट्रवाद के उच्चादर्श में है, और वेद के किसी एक सूक्त के कुछ मंत्रों में देखना हो तो उपर्युक्त 'पृथिवी सूक्त' अर्थात् अथर्ववेद 12/1 मंत्र 1–63 में है।

'योगक्षेमो नः कल्पताम्' अर्थात् हमारी स्वाधीनता हम सबके लिए सुखदायी हो, यह कामना तो वैदिक राष्ट्रवाद का मात्र एक आयाम है, इसके अतिरिक्त इस पूरी राष्ट्रीय प्रार्थना में (यजुः 22/22) अनेक अन्य ऐसी कामनायें हैं जो राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग के प्रजाजनों, हमारे पशुओं, फल फूल औषधियों (समस्त पर्यावरण), आवश्यकतानुसार वृष्टि आदि से संबंधित हैं, अर्थात् सबकी समान सर्वांगीण उन्नति, विकास, हित–संपादन वैदिक राष्ट्रवाद की मूल भावना है जो वर्तमान में विलुप्त प्रायः होती जा रही है जो कि राष्ट्रवासियों के लिए एक बेहद दुःखद एवं अशुभ संकेत है।

हम अपना 67 वाँ स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से, सोत्साह एवं सोल्लास मनायें, किन्तु यह न भूलें कि चन्द जगमगाते नगरों अथवा 20–25 प्रतिशत खाते–पीते, सुविधा सम्पन्न, धन कुबेरों का नाम ही देश नहीं है। वे 70–75 प्रतिशत अभावग्रस्त एवं अभागे प्रजाजन भी इसी देश के नागरिक हैं जो बड़ी मुश्किल से अपने लिये दो वक्त की रूखी, सूखी रोटी का जुगाड़ कर पा रहे हैं। वैदिक राष्ट्रवाद में निहित भावना को हमने अपनाया होता तो इतनी भयंकर विषमता का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। विचारकों ने राष्ट्र के जो ये तीन घटक माने हैं –

1. भूमि
2. भूमि पर बसने वाले जन और
3. जन की संस्कृति,

ये तीनों राष्ट्र की वैदिक मान्यता के पर्याप्तरूपेण अनुरूप हैं। इसलिये एक प्रभुता संपन्न, स्वतंत्र देश में इन तीनों की सुरक्षा और भलाई पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये। इनकी 'स्वस्ति' (भलाई) ही राष्ट्रीय सुव्यवस्था (शांति) का एकमात्र सुदृढ़ आधार है। द्रष्टव्य है कि यज्ञ के मंत्रों में महर्षि ने 'स्वस्तिवाचनम्' को पहले रखा है और तत्पश्चात् 'शांतिकरणम्' को। इससे हमें महर्षि की बहुत ही सुलझी हुई, युक्ति युक्त और वैज्ञानिक सोच का भी परिचय मिलता है।

वेद–ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है, पूर्ण है, अखण्ड है और चारों वेदों में कहीं भी विरोधाभास या अंतर्विरोध नहीं है। जो बातें राष्ट्रीय प्रार्थना (यजुः 22/22) में हैं उन्हीं का पूरा समर्थन और पुष्टि अथर्ववेद के 'पृथिवी–सूक्त' (अथर्व 12/1/1–63) में है और उन्हीं पर पूरा और ऋग्वेद के इस मंत्र में है –

ओं इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।
ऋग्. 1/13/9

इसी प्रकार के सर्वहितकारी, प्रखर राष्ट्रवाद का प्रतिपादन इन मंत्रों में भी है –

ओं सरस्वती साधयन्ति धियं न इळा देवी
भारती विश्वतूतिः।
तिस्त्रो देवीः स्वधया ...
ऋ. 2/3/8

तथा

ओं आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा
ऋ. 3/4/8 7/2/8

इन मंत्रों में 'इला' शब्द मातृभाषा के लिये प्रयुक्त हुआ है, 'सरस्वती' अपनी संस्कृति के लिए तथा 'मही' मातृभूमि के लिये। इनका संकेत बाद के चिंतन पर आधारित राष्ट्र के इन तीन घटकों की ओर ही है, या यूं कहें कि इन घटकों –

भूमि, जन और जन की संस्कृति का आधार ये उक्त वेद मंत्र ही हैं।

अतः आज स्वतंत्र भारत के कर्णधारों को चाहिये कि वे वेद के राष्ट्र, राष्ट्रवाद, राष्ट्रप्रेम विषयक चिंतन को नई पीढ़ी की शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करें, न केवल शामिल करें बल्कि हम सभी इस विचारधारा को अपने व्यवहार में अपनायें। यदि हम भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने की मंशा रखते हैं, यदि हम दलगत राजनीति की दलदल से बाहर निकलकर वास्तव में सबका भला चाहते हैं, यदि हम आरक्षण की मूल भावना के अनुरूप इसे वोट–बैंक से जोड़कर नहीं देखना चाहते, छद्म सैक्युलरवाद का सहारा लेकर विभिन्न वर्गों को साम्प्रदायिक, गैर–साम्प्रदायिक आदि खेमों में नहीं बांटना चाहते, सरहदों की पुख्ता सुरक्षा चाहते हैं, और सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात–यदि हम अपने प्रजातंत्र को फूलता, फलता देखना चाहते हैं, इसका भविष्य उज्ज्वल चाहते हैं तो हमें तुरन्त विदेशों से आयातित राष्ट्र–विषयक विचारधारा, तदनुरूप प्रत्यक्ष व्यवहार, उन्हीं से प्रभावित अपनी रीति नीति तुरन्त त्यागनी होगी और अपनी स्वदेशी, वेद प्रतिपादित राष्ट्र विषयक विचारधारा को अपनाना होगा, इसी में हम सबका भला है, प्रजातंत्र के उज्ज्वल भविष्य की भी इसी में गारण्टी निहित है, और यह भी तय है कि हम वास्तव में ही एक महाशक्ति बनकर विश्व में अपने गौरव का परचम लहरा पायेंगे, पुनः जगद् गुरु बनकर शेष विश्व का मार्गदर्शन कर सकेंगे तथा महर्षि मनु की इस ऐतिहासिक घोषणा को दोहरा सकेंगे–

एतददेश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां
सर्वमानवाः।।

यह तभी होगा जब हम 'माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्याः' की पावन भावना से ओतप्रोत राष्ट्रवाद को सर्वतोभावेन अपनायेंगे। और यह मानकर चलेंगे कि –

राष्ट्र नाम नहीं है केवल भूमि,
पर्वत, नदियों का या कि फिर मनुष्य, पशु,
पंछी, खेत, खलिहान, वनस्पतियों का
इनसे ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ घटक
और भी होते हैं
जिन्हें विचारक धर्म, संस्कृति,
निज भाषादि कहते हैं।
इन सबका समुच्चय, समवेत स्वरूप ही
राष्ट्र कहलाता है।
वैदिक राष्ट्रवाद इन सबसे करना
प्यार सिखलाता है
प्रजाजनों का मातृभूमि से माँ बेटे का नाता है
वैदिक राष्ट्रवाद यही है यूँ वेद साफ बतलाता है।

संपर्क सूत्र – 1607/7, जवाहर नगर, पटियाला चौक, जींद (हरियाणा) 126202
मो. 09416294347, 01681–226147

उत्कृष्ट शंका समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

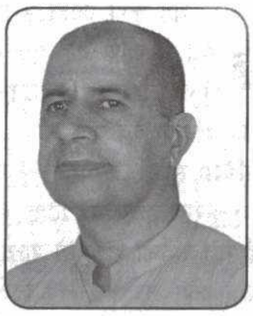

शंका–'वृक्षों' के अंदर 'जीवात्मा' कहाँ रहता है?

समाधान– इसका उत्तर है – वृक्षों की जड़ में। जब तक वृक्ष की जड़ सलामत है, तब तक वृक्ष जीवित है। यदि जड़ को उखाड़ दिया जाये, तो फिर वह मर गया। ऊपर से काटते–छाँटते रहो, लेकिन जड़ पर प्रहार मत करो। कई बार ऊपर से वृक्षों को काट देते हैं, लेकिन वो मरते नहीं, फिर दोबारा खड़े हो जाते हैं। इसका मतलब जीवात्मा–वृक्ष की जड़ में होना चाहिए।

शंका– मृत्यु से भय क्यों लगता है?

समाधान– मृत्यु से भय का कारण है– 'अविद्या'। सवाल उठता है, कि इस अविद्या को कैसे दूर करें? बताइये, आप शरीर हैं या आत्मा? क्या आत्मा का जन्म होता है? नहीं। आत्मा का जन्म नहीं होता। क्या आत्मा मरती है? नहीं मरती। आत्मा का जन्म भी नहीं होता और आत्मा मरती भी नहीं, तो फिर मरने से डरना क्यों? **मृत्यु से डर तो इसलिये लगता है, कि हम शरीर को आत्मा समझने की भूल करते हैं,** यह गड़बड़ है। यह सबकी समस्या है।

सब लोग शरीर को आत्मा मानते हैं, यही अविद्या है। इस अविद्या को दूर करें। 'शरीर' अलग है, 'आत्मा' अलग है। शरीर का जन्म होता है, शरीर की मृत्यु होती है। आत्मा का जन्म नहीं होता, आत्मा की मृत्यु नहीं होती है। और हम शरीर नहीं हैं, हम तो हैं आत्मा। तो फिर मरने से क्या डरना? मौत आएगी, तो आएगी।

हम आत्मा हैं, शरीर हमारी गाड़ी है, आत्मा इस शरीर में बैठा है। आत्मा शरीर में बैठने से, वो दो चीज नहीं हो जाता। जैसे आप कार में बैठ गए तो क्या आप दो चीज बन गए? आप कार में बैठ गए तो केवल इतना ही तो है, कि आप कार में बैठे हैं। बैठ गए, फिर उतर जायेंगे, अलग हो जायेंगे। ऐसे ही **'आत्मा' शरीर में बैठा है, फिर छोड़कर अलग हो जाएगा। इतनी सी बात है।** कार में बैठने से व्यक्ति कार नहीं बनता, यथावत् दोनों का संयुक्त स्वरूप नहीं हो जाता। ऐसे ही आत्मा के शरीर में बैठने से शरीर और आत्मा दोनों का मिश्रित (मिक्स) स्वरूप नहीं हो जाता है। **हम शरीर को आत्मा मानते हैं अथवा दोनों को मिलाकर एक चीज मानते हैं, यही तो अविद्या है।** इसी अविद्या के कारण मृत्यु से डर लगता है।

शंका– मैं नेत्रहीन हूँ, पर स्वप्न क्यों आते हैं?

समाधान– अनेक जन्मों के संस्कार इस जन्म में साथ में आते हैं। अब संस्कार से ही स्वप्न पैदा होता है। स्वप्न की उत्पत्ति संस्कारों से होती है। अब यह तो मेरा अनुभव नहीं है। मैं सीधा–सीधा प्रत्यक्ष नहीं कह सकता, कि पूर्वजन्म के संस्कारों से भी स्वप्न आते हैं, या नहीं आते। आपको रूप का स्वप्न नहीं आता, इससे यह संभावना लगती है कि पूर्वजन्म के संस्कार से स्वप्न नहीं आ रहा क्योंकि पूर्वजन्म में तो आपकी आँख ठीक–ठाक रही होगी। यह तो इसी जन्म में बिगड़ी है। या ऐसा मान लिया जाए, पिछले बीस जन्म से बिगड़ी है। ऐसा तो नहीं मान सकते न। आँख से उस समय तो आपने दृश्य देखे होंगे। वो संस्कार इस जन्म में साथ में चले आए। पर इस जन्म में आपको रूप का दर्शन नहीं हुआ और आपको रूप का स्वप्न भी नहीं आया। आपकी इस बात से यह लगता है, कि पूर्वजन्मों के संस्कारों से इस जन्म में स्वप्न नहीं आ रहे। सुनकर तथा अन्य इन्द्रियों के विषयों को भोगने भी संस्कार बनते हैं, और उन संस्कारों से स्वप्न आते हैं। यह बात है। जो आपके प्रश्न का उत्तर है।

शंका– जीवात्मा का स्वरूप क्या है? क्या जीवात्मा निराकार है?

समाधान– आत्मा 'अणु–स्वरूप' **मतलब बहुत सूक्ष्म होती है। आत्मा एक जगह रहती है। वह स्थान नहीं घेरती। जीवात्मा निराकार है।** नियम सुन लीजिये। जो वस्तु चेतन होती है, वो निराकार होती है। ईश्वर चेतन है या जड़? चेतन। ईश्वर साकार है या निराकार? निराकार। ईश्वर चेतन है, ईश्वर निराकार है। जीवात्मा चेतन है या जड़? उत्तर है– चेतन है। तो वो भी निराकार है, जैसे ईश्वर। और यह प्रकृति जड़ है या चेतन? जड़। प्रकृति जड़ है, तो वो साकार है। दोनों नियम साफ हैं। जो वस्तु चेतन होती है, वो निराकार होती है। जो वस्तु जड़ होती है, वो साकार होती है। प्रकृति जड़ है, वो साकार है। ईश्वर और जीव चेतन हैं, वो दोनों निराकार हैं। मन, आदि जड़ होने के कारण सब साकार हैं। इनका आकार बहुत छोटा है। हम देख नहीं पाते, वो अलग चीज है। लेकिन हैं ये सब साकार। प्रकृति– (सत्त्व, रज, तम) वो भी जड़ हैं, वो भी साकार हैं।

महर्षि दयानंद जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है कि– **साकार वस्तु से ही साकार वस्तु उत्पन्न हो सकती है। निराकार से साकार नहीं हो सकती।** एक संदर्भ में लिखा है– जहाँ पर ये लोग मानते हैं, कि यह जगत ईश्वर का ही रूपांतर है, मतलब ईश्वर से ही यह जगत बना है, इस जगत का रॉ–मटेरियल ईश्वर है। इसके संदर्भ में महर्षि दयानंद जी ने लिखा, कि– ईश्वर साकार है या निराकार? यदि ईश्वर निराकार है, और जगत का उपादान कारण ईश्वर होवे, तो जगत भी निराकार होना चाहिये, परन्तु जगत तो साकार है। इससे सिद्ध हुआ, कि इसका रॉ–मटेरियल भी साकार है। जगत साकार है, यह प्रत्यक्ष है। इससे अनुमान हुआ, कि जो इसका उपादान कारण प्रकृति है, वो भी साकार है। उसी प्रकृति से – (साकार सत्, रज, तम से) ही मन, इन्द्रियाँ, बुद्धि, शरीर आदि सब पदार्थ बने हैं। इसलिये मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ जड़ भी हैं, साकार भी हैं।

शंका– आत्मा का क्या परिमाण है?

समाधान– आत्मा बहुत छोटा है। यह इतना छोटा है कि ऐसे–ऐसे जीव–जन्तुओं में भी आत्मा होता है जिन्हें हम आँख से देख नहीं सकते, कभी–कभी माइक्रोस्कोप से भी नहीं देख पाते।

दर्शन योग महाविद्यालय
रोजड़ (गुजरात)

शहीद खुशीराम

● डा. धर्म देव विद्यार्थी

डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के छात्र शहीद श्री खुशीराम जी का जन्म 11 अगस्त, सन् 1900 में जिला जेहलम के गाँव पिण्डी सैदपुर में हुआ। इनके पिता का नाम लाला भगवान दास था। इनका परिवार गरीब था। इनके पिता मजदूरी आदि करके जीवन–यापन करते थे। दुर्दैव से श्री खुशीराम जी की बाल्यावस्था में ही पिता जी स्वर्ग सिधार गए। पिता की मृत्यु के पश्चात् इनका पालन–पोषण नवांकोट के अनाथालय में हुआ। इनके सुदृढ़ शरीर की बलिष्ठता को देखते हुए बचपन में इनका नाम भीमसेन रखा गया। कहते हैं कि बचपन में एक ज्योतिषी ने इनकी जन्म पत्री तैयार की थी जिसके अनुसार इस बालक ने आगे चलकर बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त करनी थी। इस बालक ने न केवल प्रसिद्धि प्राप्त की बल्कि अपनी बहादुरी, वीरता व देशभक्ति की भावना के कारण देश पर शहीद होकर अमरत्व की प्राप्ति भी की।

19 वर्ष की आयु में इन्होंने डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से शास्त्री की परीक्षा पास की। इसी वर्ष 1919 में अंग्रेजों द्वारा पारित रोलट एक्ट जैसे अन्यायपूर्ण कानून के विरोध में हड़तालें व प्रदर्शनों का कार्यक्रम चला तो लाहौर में भी डी.ए.वी. कॉलेज के छात्रों ने हड़ताल की व जुलूस निकाला। उस जुलूस का नेतृत्व इस नौजवान ने किया जिसका नाम अब खुशीराम था। 12 अप्रैल 1919 को बादशाही मस्जिद लाहौर में एक विशाल जनसभा हुई। इन जनसभा की अध्यक्षता मौलवी मुहम्मद अली ने की। इन जनसभा में हिन्दू और मुस्लिम दोनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। जनसभा में यह निश्चय हुआ कि अंग्रेजी सरकार को भारत से बाहर किया जाए। अंग्रेजी सरकार के इस काले कानून के विरोध में एक विशाल जुलूस निकाला जाए। इस जनसभा में अनेक वक्ताओं ने भाषण दिए और यह संकल्प लिया गया कि लाहौर की हीरा मण्डी में तिरंगा झण्डा फहराकर अंग्रेजी सरकार का विरोध किया जाए। खुशीराम ने इस जनसभा में घोषणा की कि "मैं भारत माँ की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तिरंगा झण्डा हीरा मण्डी चौक में लहराऊँगा और इसके लिए जान की बाजी तक भी लगा दूँगा।" जुलूस निकला और इस जुलूस का नेतृत्व खुशीराम जी ने किया। वे तिरंगा झण्डा लेकर सबसे आगे चल रहे थे। जुलूस में हजारों की संख्या में हिन्दू–मुस्लिम भारत माँ की जय के नारे लगाते चल रहे थे। जैसे–जैसे जुलूस आगे बढ़ता गया, लोगों की संख्या भी बढ़ती गई और जोश भी बढ़ता गया। लोग घरों से निकल–निकलकर व दुकानों से निकलकर जुलूस में सम्मिलित होते गए। ऐसा लगता था मानों सारा लाहौर इस जुलूस में उमड़ आया हो। अंग्रेज सरकार को जब इस जुलूस के संकल्प की सूचना मिली तो उन्होंने निश्चय किया कि किसी भी दशा में हीरा मण्डी चौक में तिरंगा झण्डा नहीं लहराने दिया जाएगा। अतः जुलूस को रोकने के लिए एक फौजी टुकड़ी भेजी गई। इस टुकड़ी का नेतृत्व नवाब मोहम्मद बरकत अली कर रहा था। वह अपने सिपाहियों के साथ जुलूस के मार्ग में रास्ता रोककर खड़ा हो गया। उसने जुलूस को तितर–बितर करने की आज्ञा दी और कहा कि जुलूस रोक दिया जाए। अब

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

प्रायः यह कहा जाता है कि सब मतों में सत्य का कुछ अंश है और निश्चय ही उनमें कुछ सत्य है भी, क्योंकि वेद कहते हैं :–

सत्यनोत्तभिता भूमिः ऋग्वेद 10.95.1.

अर्थात् संसार सत्य पर टिका हुआ है। यदि कोई मत सर्वथा सत्य से शून्य हो तो उसका एक क्षण भर के लिए टिकने का प्रश्न ही नहीं उठता।

विशुद्ध ठगियां व सब प्रकार के झूठ जो बहुत लम्बे समय से संसार का ध्यान खींच रहे हैं, इनका आधार भी कुछ सत्य ही है। भले ही सत्य का अंश स्वल्प हो **परन्तु कुछ खोट रहित सत्य इनकी नींव में भी है।**

तो फिर क्या हम इन सब मतों को अपना लें और इन सब धर्मगुरुओं का अनुकरण करें? जो कोई ऐसा कर सके, मैं उस व्यक्ति को बधाई दूंगा। क्योंकि उसने ऐसा कर दिखाया है जो मुझे अव्यावहारिक दीखता है। सब मतों की नींव में सत्य है। यह कथन तो सत्य है **परन्तु सब मत एक समान सत्य नहीं हैं।** न ही सब धर्मगुरु एक समान महान् हैं। यह वह सत्य है जिसकी प्रायः अवहेलना की जाती है। यही कारण है कि इन परस्पर लड़ने झगड़ने वाले विभिन्न मतों में मेल मिलाप कराने वालों के सब प्रयास निष्फल हो जाते हैं। इसका कारण यही होता है कि ऐसा प्रयत्न करने वाले रोग की जड़ से आंखें मूंद लेते हैं।

झगड़े का मुख्य कारण बिचोलिये:

मेरी दृष्टि में विभिन्न मतों के बीच की खाई को निरन्तर चौड़ा करने में सहायक कारणों में से मुख्य है मनुष्य व भगवान् के मध्य बिचौलियापन। मैं अपना अभिप्राय ठोस उदाहरण देकर स्पष्ट करूंगा। उदाहरण के रूप में पहले ईसाई मत को ही लीजिए। यह वह मत है जिसके संसार में सर्वाधिक अनुयायी हैं। यह संसार में सबसे अधिक प्रभाव रखता है। संसार के शासकों की बहुसंख्या ईसाई मत अनुयायी है। ईयाइयत है *क्या?* **ईसा मसीह का अनुकरण करना अथवा उसकी शिक्षा पर आचरण करना?** सम्भवतः कुछ लोग यह कहें कि एक का अनुकरण दूसरे का आचरण ही तो है परन्तु दोनों में संकेततः समानता (एक ही बात का होना) स्पष्ट रूप से समझ में नहीं आती।

महात्मा बुद्ध के दृष्टान्त व ईसा की कथाएं :

हम बाइबल व अन्य स्रोतों से जो कुछ समझ पाए हैं वह यह है कि ईसा मसीह सर्वश्रेष्ठ आत्माओं में से एक था। उसने मनुष्यता की जितनी भी सहायता कर सकता था, करने का यत्न किया। वह न केवल अपने सुख सुविधाओं को प्रत्युत् अपने जीवन तक को भी आहूत करने का तत्पर था। और एक असहिष्णु व दमनकारी काल में, जिसमें उसका जन्म हुआ, यह स्वाभाविक ही था कि उसे इस प्रकार से प्रताड़ित किया जाता, जैसा कि उसे किया गया। यह सब प्रशंसनीय

भक्त व भगवान् के बीच में

● पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

अनुवादक – प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

दो अंको में समाप्त

पूज्य उपाध्याय जी ने इस विषय पर बहुत कुछ लिखा है। 'गंगा–ज्ञान–सागर' में भी इस विषय पर एक लेख दिया गया है। उपाध्याय जी द्वारा अंग्रेजी में लिखित ट्रैक्ट Between Man and God अंग्रेजी पठित लोगों में बड़ा लोकप्रिय रहा। अंग्रेजी में यह अपने ढंग का पहला ट्रैक्ट था। प्रस्तुत लेख 'भक्त और भगवान् के बीच में' उसी ट्रैक्ट का हिन्दी अनुवाद है। यह अनुवाद कई प्रादेशिक भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है। इसकी सर्वत्र मांग रही है। हिन्दी भाषा में भी यह तीन बार छप चुका है। मान्य जिज्ञासु जी की स्वीकृति से आर्य जगत् के पाठकों हेतु इस लेख को प्रकाशित किया जा रहा है —संपादक

है। उसके अन्तिम शब्दों से किसका हृदय द्रवित नहीं होगा। **''मेरे पिता मैं अपने आत्मा को तेरे अर्पण करता हूँ''** किस पर उसकी अद्भुत बोध कथाओं (दृष्टान्तों) का प्रभाव नहीं पड़ेगा? परन्तु निश्चय ही यह ईसाई मत नहीं है क्योंकि महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं व दृष्टान्त भी इससे कोई कम नहीं थे।

पादरी जी से पूछो तो :

– मेरे पादरी मित्र से पूछिये तो, सच्चा ईसाई बनने के लिए क्या करना होता है?

– ईसा जैसा जीवन बिताने से कोई ईसाई नहीं बन सकता।

– न ही उस जैसा परोपकारी बनने से।

– जब तक मरयम के कौमार्य पर विश्वास नहीं करेंगे, जब तक आप ईसा के विचित्र दैवी पुत्र (Divine Sonship) की मान्यता को नहीं मानते।

– जब तक आप उसके तीसरे दिन जी उठने की बात में आस्था व्यक्त नहीं करते।

– जब तक आप नहीं मान लेते कि उसकी मृत्यु पापी आदम की सन्तान द्वारा किये गये, किये जा रहे व किये जाने वाले पापों के प्रायश्चित स्वरूप है।

– तब तक स्वर्ग के द्वारा आपके लिए बन्द ही रहेंगे।

इकलौते पुत्र को प्रसन्न किये बिना आप स्वर्गस्थ पिता (Heavenly Father) को कैसे प्रसन्न कर सकते हैं? समस्त ईसाई जगत् द्वारा अपनी सम्पूर्ण शक्ति से 'इक्लौते' शब्द पर दिये जाने वाले बल पर ध्यान दीजिए। इस प्रकार ईसा की शिक्षाएं ईश्वर–प्राप्ति की ओर सहायक बनने की बजाय, ईसाइयत की परम्पराओं के रखवालों ने उसके नाम को मनुष्य और उसके बनाने वाले के बीच में खड़ा कर दिया है। ईसा के उपदेशों की प्रशंसा करना तो तर्कसंगत था परन्तु उसकी माता का कौमार्य एक ऐसा विषय है जिसका निरीक्षण परीक्षण व प्रदर्शन नहीं किया जा सकता अतः यह एक भ्रम, अन्धविश्वास के सिवा कुछ भी नहीं है। किसी व्यक्ति को, यदि वह इस अन्धविश्वास को नहीं मानता, केवल इस कारण से नास्तिक अथवा अविश्वासी मानकर उसकी निन्दा क्यों की जाये? यदि आप ईसा की एक विशेष प्रकार की जन्मविधि को नहीं मानते तो आप उसकी महानता को कैसे घटाते या उसका अवमूल्यन करते हैं? यदि उसके जन्म को रहस्य की पोटली में न लपेटा जाये तो फिर उसकी शिक्षाओं का महत्त्व कैसे कम हो जाता है?

ईसा किस प्रकार से ईश्वर–पुत्र था? क्या जैसे हम हैं वैसे ही अथवा किसी और अर्थ में? यदि हम जैसा ही ईश्वर पुत्र था तो इससे उसकी महिमा कुछ नहीं बढ़ती और यदि दूसरे प्रकार से तो फिर विचारशील लोगों के सम्मुख विश्वास के लिए इसे रखने से पहले इस रहस्य को खोलना आवश्यक है। इसी प्रकार इस धरा पर सूली पर से जी उठने की मान्यता का क्या अर्थ है? क्या ईसा मसीह की सूली पर मृत्यु हो गई अथवा दूसरे शब्दों में क्या उसका आत्मा देह को छोड़ गया? यदि वह निकल गया था तो फिर किस प्रकार व क्यों वापस आया? यदि नहीं, अर्थात् यदि वह घावों के कारण अचेत था और चेतना लौट आई तो ऐसी घटना चाहे विरली हो असम्भव तो नहीं है और इससे ईसा किसी प्रकार भी मानवेतर नहीं बन जाता।

ईसा ईश्वर पुत्र कैसे?

ईसा किस प्रकार से ईश्वर–पुत्र था? क्या जैसे हम हैं वैसे ही अथवा किसी और अर्थ में? यदि हम जैसा ही ईश्वर पुत्र था तो इससे उसकी महिमा कुछ नहीं बढ़ती और यदि दूसरे प्रकार से तो फिर विचारशील लोगों के सम्मुख विश्वास के लिए इसे रखने से पहले इस रहस्य को खोलना आवश्यक है। इसी प्रकार इस धरा पर सूली पर से जी उठने की मान्यता का क्या अर्थ है? क्या ईसा मसीह की सूली पर मृत्यु हो गई अथवा दूसरे शब्दों में क्या उसका आत्मा देह को छोड़ गया? यदि वह निकल गया था तो फिर किस प्रकार व क्यों वापस आया? यदि नहीं, अर्थात् यदि वह घावों के कारण अचेत था और चेतना लौट आई तो ऐसी घटना चाहे विरली हो असम्भव तो नहीं है और इससे ईसा किसी प्रकार भी मानवेतर नहीं बन जाता।

प्रायश्चित्त की मान्यता

इसी प्रकार मेरे या आपके पापों के प्रायश्चित के लिए ईसा का सूली पर चढ़ना कुछ अर्थ नहीं रखता। हाँ उसकी शिक्षाएं तो मानव कल्याण के लिए पर्याप्त महत्व रखती हैं। यदि एक मनुष्य वैसे ही प्रेम करे जैसे ईसा करता था और यदि वह वैसे ही परोपकारी बने जैसा ईसा था तो वह परमेश्वर का प्यारा बनेगा परन्तु **ईसा का लहू उनके लिए क्या प्रायश्चित्त हो सकता है जो उससे पहले ही चल बसे?** उसकी शिक्षाओं पर यदि आचरण किया जाए तो यह एक मनुष्य को पाप कर्म करने से बचा सकता है। यह एक बात है **परन्तु ईसा के सूली पर लटकाए जाने के दो सहस्त्र वर्ष के पश्चात् आज किसी मनुष्य द्वारा किये गये पापों का उससे (सूली पर चढ़ने से) कैसे प्रायश्चित्त हो गया?** ऐसे अन्धविश्वास को गढ़ना भले ही वह किसी भी मत का कितना भी मान्यता प्राप्त सिद्धान्त क्यों न हो, यह ईश्वर व मनुष्य के बीच में एक अभेद्य दीवार खड़ी करने से अधिक कुछ भी नहीं।

ईश्वर को विसार कर

ईसा ने कभी यह प्रचार नहीं किया कि लोग भगवान् को तो भूल जायें और उसको स्मरण करें। न ही उसने यह दावा किया कि वह भगवान् है, अथवा भगवान् का अवतार है। परन्तु ईसाईयों ने ईसा से चिपकने के जोश में परमेश्वर को विसार दिया है अथवा उसको तज दिया है और परमात्मा के स्थान पर ईसा को बिठा दिया है। परमात्मा की माता आहें भरती है अथवा 'परमात्मा के घाव' जैसी ईसाई जगत् की प्रिय उक्तियां यह बहुत कुछ दर्शाती हैं कि ईसा का उद्देश्य धरती पर परमात्मा का राज्य स्थापित करना था, उसने परमात्मा को सिंहासनच्युत करके सिंहासन छीन लिया है। इस बात को छोड़िये कि ईसा की शिक्षाएं कितनी उदात्त थीं, ईसाइयत के रक्षक विचारशील लोगों को अपील न कर सकने वाली अन्धविश्वास की बातों को जितना महत्त्व देते हैं, उससे कहीं कम ईसा की शिक्षाओं को महत्व देते हैं।

और इस्लाम की स्थिति

अब इस्लाम को लीजिये। यह अच्छी बात है कि इसके मानने वाले मुहम्मदी की बजाय इसे इस्लाम का नाम देते हैं क्योंकि दूसरे नाम से मनुष्य–पूजा की गन्ध आती है, परन्तु यहां भी आपके सामने वही समस्या है। यदि आप गहराई से इस्लामी मान्यताओं अथवा विश्वासी मोमिनों के जीवनों व विश्वासों का अध्ययन करेंगे तो एक बात सुस्पष्ट होकर सामने आयेगी कि अल्लाह व अल्लाह से जुड़ा सब कुछ मुहम्मद के व्यक्तित्व की तुलना में बौना पड़ जाता है। मनुष्य द्वारा की जाने वाली भक्ति

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

☞ पृष्ठ 06 का शेष

भक्त व भगवान् के...

में वह अल्लाह का भागीदार है। यदि हज़रत मुहम्मद की रसालत (Mediation) को अस्वीकार करके कोई अल्लाह की भक्ति, भजन करता है तो वह एक पापकर्म करता है। ऐसा पाप जो अक्षम्य है (जिसकी उपेक्षा असम्भव है) और ऐसे व्यक्ति की पूजा प्रार्थना सब निष्फल हो जाती है। इस्लाम शब्द का अर्थ है विश्वास और मुसलमान विश्वासी है परन्तु किस में विश्वास? क्या इसका अर्थ अमूर्त में विश्वास है? निश्चय ही ऐसा नहीं है। मूर्तिपूजा में विश्वास इस्लाम नहीं है, न ही असंख्य मूर्तिपूजक मुसलमान हैं। तो क्या इसका अर्थ एक विधाता में *विश्वास है? कदापि नहीं, इस प्रकार से तो* प्रत्येक ईसाई भी जो एकेश्वरवादी होने का दम मारता है, उतना ही सच्चा विश्वासी होगा जितना कि एक मुसलमान।

फिर ये एक क्यों नहीं?

ईसाइयत के एकेश्वरवाद व मुहम्मदी एकेश्वरवाद में फिर भेद क्या है? मैं समझता हूँ कि दोनों ही एक से अधिक भगवान् में आस्था नहीं रखते। फिर ये दो क्यों हैं? एक क्यों नहीं? केवल इस कारण कि टकसाली सिक्केबन्द मुसलमान जिस इस्लाम की दुहाई देते हैं वह **'एक ईश्वर में विश्वास'** से कहीं अधिक है।

इतने मात्र से वह आग नहीं छोड़ेगी

मैं भले ही यह मानूं कि ईश्वर एक है। मैं चाहे यह मानूं कि वह एक प्रभु ही सृष्टि का रचयिता, पालक व संहारक है। मैं भले ही यह मानता हूँ कि वह प्रभु दयालु, न्यायकारी व ऐसे गुणों व शक्तियों से विभूषित है परन्तु मैं एक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक कि मैं हज़रत मुहम्मद को अल्लाह का रसूल नहीं मानता। केवल इतने पर ही बस नहीं है। सामान्य अर्थों में तो प्रत्येक बुद्धिमान् व्यक्ति यह स्वीकार करेगा कि मुहम्मद एक धर्माचार्य थे अर्थात् **वह जगत् गुरु (World Teacher) थे, *जैसे कि सैकड़ों अन्य भी थे व होंगे।* वह** हमारी प्रशंसा व कृतज्ञता के भी योग्य हैं कि उन्होंने अपने सामर्थ्यानुसार यथामति जैसे उचित जाना अपने लोगों की अवस्था सुधारने का प्रयास किया परन्तु इतना मान लेना तो नगण्य सा है। यदि आपका विश्वास इस सीमा तक हो जाता है तो नरक में (दोज़ख) काफ़िरों के लिए धधकती प्रचण्ड आग आपको क्षमा नहीं कर सकती। आपको इस्लाम की मूलभूत मान्यताओं को मानना ही होगा। वे क्या हैं ? केवल इतना ही नहीं कि खुदा एक है और एक ही है। और मुहम्मद उसके नबियों में से एक थे। **प्रत्युत यह मानना पड़ेगा कि मुहम्मद उसका अन्तिम पैगम्बर था।**

सब नियम निरस्त

मुसलमानों के अनुसार इसका परिचायक अर्थ यह है कि अल्लाह द्वारा मुहम्मद को दिये गये नियम के लागू होने से मुहम्मद से पूर्व आए पैगम्बरों के सब नियम निरस्त हो जाते हैं और मुहम्मद के पश्चात् भी कोई पैगम्बर नहीं आयेगा। जब तक यह नहीं मानेंगे कि अन्तिमता (Finality) मुहम्मद में पहुंच गई (और वहीं समाप्त हो गई) तब तक आप एक मुस्लिम नहीं हो सकते और न ही आपका मत भी इस्लाम हो सकता है परन्तु इतने पर भी बस नहीं। आपको आगे चलना होगा। आपको यह भी मानना पड़ेगा कि भले ही मुहम्मद के निधन को एक दीर्घकाल बीत गया तथापि उसी की सिफारिश से आपके किये दुष्कर्म पाप क्षमा किये जा सकते हैं। भारत के गली कूचों में एक सामान्य मुसलमान द्वारा गाई जाने वाली ये दो पंक्तियां सारे मुस्लिम जगत् की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन करवाती हैं :–

कहता था खुदा दिल में न घबराय मुहम्मद।
बख्शूँगा उसी को, जिसको फ़रमाय मुहम्मद।।

एक अन्य ऐसे गीत की पंक्तियां हैं :–

अल्लाह के पल्ले में वाहदत के सिवा क्या है?
लेना है सो ले लेंगे हम अपने मुहम्मद से।।

अर्थात् अल्लाह के पास एकत्व (Oneness) के अतिरिक्त है ही क्या? हमने जो कुछ भी लेना है उसके पैगम्बर **मुहम्मद से ले लेंगे।**

यह जन साधारण का ही विचार नहीं है। यह तो इस्लाम की एक मूलभूत मान्यता है। यह वह आधारशिला है जिस पर इस्लाम का सारा विशाल भवन खड़ा है। भले ही आप उस अल्लाह में आस्था रखें जिसको मुहम्मद साहब स्वयं पूजते थे, आप भले ही उन नैतिक नियमों का पालन करें जिनका पालन करने के लिए हज़रत मुहम्मद ने आपको उपदेश दिया। इससे क्या बनता है? यदि आप खुदा के नबी मुहम्मद की 'पूर्ण पूर्णता' में विश्वास करने में ढील दिखाते हैं तो आप कहीं के भी नहीं रहेंगे। एक काफिर, एक अविश्वासी, वह जिसका स्थान वह जहन्नुम (नरक) है जहां प्रचण्ड अग्नि धधकती रहती है और क्या नहीं है। मेरे विचार में ऐसा विश्वास परमात्मा व मनुष्य के बीच में एक स्थूल दीवार खड़ी करने के सिवा कुछ भी नहीं है। ज्यों ही आप इस बिन्दु पर बल देते हैं, तब आप केवल मनुष्य का ध्यान परमात्मा से हटाकर पैगम्बर पर केन्द्रित कर देते हैं, और जिस प्रयोजन की सिद्धि के लिए मुहम्मद ने इतना प्रयास किया लगता है वह विफल हो जाता है। इस्लाम की नींव ही इससे हिल जाती है। मुहम्मद के सब किये कराये पर पानी फिर जाता है। संसार को एक सूत्र में पिरोने की बजाय वह विघटन कर देता है और इसका परिणाम होता है –

1) शान्ति नहीं घृणा।
2) विश्वास नहीं अविश्वास।
3) देवत्व नहीं अदेवत्व (दनुजता)।
4) आध्यात्मिकता नहीं इसके सर्वथा विपरीत।

मुसलमानों के अनुसार इसका परिचायक अर्थ यह है कि अल्लाह द्वारा मुहम्मद को दिये गये नियम के लागू होने से मुहम्मद से पूर्व आए पैगम्बरों के सब नियम निरस्त हो जाते हैं और मुहम्मद के पश्चात् भी कोई पैगम्बर नहीं आयेगा। जब तक यह नहीं मानेंगे कि अन्तिमता (Finality) मुहम्मद में पहुंच गई (और वहीं समाप्त हो गई) तब तक आप एक मुस्लिम नहीं हो सकते और न ही आपका मत भी इस्लाम हो सकता है परन्तु इतने पर भी बस नहीं। आपको आगे चलना होगा। आपको यह भी मानना पड़ेगा कि भले ही मुहम्मद के निधन को एक दीर्घकाल बीत गया तथापि उसी की सिफारिश से आपके किये दुष्कर्म पाप क्षमा किये जा सकते हैं। भारत के गली कूचों में एक सामान्य मुसलमान द्वारा गाई जाने वाली ये दो पंक्तियां सारे मुस्लिम जगत् की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन करवाती हैं :–

क्या मुहम्मद ने यही कुछ सिखाया?

क्या मुहम्मद ने यही कुछ सिखाया था? यदि ऐसा किया तो वह सब श्रेय गंवा देता है। यदि उसने ऐसा नहीं किया तब उसके अनुयायियों द्वारा खड़ी की गई यह दीवार उसकी शिक्षाओं के विपरीत है और यह ढहनी ही चाहिए। **वास्तव में इस्लाम जैसा कि आज प्रचारित किया जाता है, मनुष्य को भगवान् के निकट ले जाने के बजाय उसे प्रभु से सुदूर अतिदूर कर रहा है।** मुहम्मद का अभिप्राय कुछ और ही होगा परन्तु एक बिन्दु जो तर्कसंगत नहीं जंचता, जब तक उसके नामलेवा उस पर बल देते हैं तब तक इस विषय में कोई क्या कह सकता है? मुहम्मद एक महान् गुरु थे, ऐसा मानना एक बात है। वह मनुष्य व भगवान् के बीच में एक मध्यस्थ थे यह सर्वथा दूसरी बात है और जो उसका अनुयायी होने की डींग मारा करते हैं, वे दूसरी बात में ही विश्वास रखते हैं। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को मुस्लिम कहा न कि मुहम्मदी। यही तथ्य इस बात को दर्शाता है कि वह हृदय से स्वयं को इससे अलग ही रखना चाहते थे परन्तु दुर्बलता के क्षणों में वह स्वयं को विसार न सके अथवा उनके अनुयायियों ने उनके नाम का दुरुपयोग (Exploit) करने के लिए अपने आपको यह मानने के लिए **प्रेरित कर लिया कि प्रभु को पाने के लिए उनकी (पैगम्बर मुहम्मद की) मध्यस्थता** अनिवार्य है। कुछ भी हो प्रत्येक अवस्था में एक चूक हो गई है जिसकी सरलता से सुधार नहीं किया जा सकता। सत्ता का लोभ कई बार बहुत बड़े विद्वान पुरुषों को भी अन्धविश्वासों को पालने पोसने के लिए प्रेरित करता है। वे सोचते हैं कि यदि एक भ्रामक विचार जनसाधारण में फैल जाये तो वे सुगमता से उनको आधीन रख सकते हैं। राजनैतिक शोषण तो दिन प्रतिदिन चल ही रहा है और इस शोषण ने ही धर्म के मुख पर सर्वाधिक कालिमा पोती है। कभी कभी एक धर्म सुधारक स्वयं ही राजनेता बन जाता है तब बहुत बड़ा अन्याय होता है। इस्लाम व अन्य मतों के कई नेताओं के काम इस तथ्य के ज्वलन्त प्रमाण हैं। इसने मनुष्य को अन्यायी बना दिया है। जिस समय एक पक्ष उनके नाम को बहुत ऊँचा उठाता है तो दूसरा पक्ष उसका जो प्रतिफल मिलना चाहिए वह भी खींच लेता है।

शेष अगले अंक में....

सरफरोशी की तमन्ना

सरफरोशी1 की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना, बाजु–ए–कातिल2 में है?
रहबरे–राहे–मुहब्बत3, रह न जाना राह में,
लज्जतें–सहरा–नवर्दी4, दूरि–ए–मंजिल में है।
वक्त आने दे, बता देंगे तुझे ए आस्मां,
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।
ऐ शहीदे–मुल्को–मिल्लत5, मैं तेरे ऊपर निसार6,
तेरी कुर्बानी का चर्चा, गैर की महफिल में है।
अब न अगले वलवले7 हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले–'बिस्मिल' में है।

रामप्रसाद 'बिस्मिल'
आजादी की लड़ाई के कुछ जब्तशुदा तराने से साभार

1. सिर कटाने की; 2. हत्यारे की भुजा; 3. प्रेम–मार्ग का पथिक; 4. जंगल में घूमने का आनंद; 5. देश और राष्ट्र पर न्योछावर होने वाले; 6. न्योछावर; 7. जोश; उत्साह।

महर्षि दयानन्द ने खण्डन–मण्डन, समाज सुधार व वेद प्रचार क्यों किया

● मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 में दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द से अध्ययन पूरा कर कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया था। उन दिनों में देश में अज्ञान, धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास, कुरीतियां व अधर्म इतना अधिक बढ़ गया था कि इन बुराइयों से मुक्त होने का न किसी के पास कोई उपाय था और न ही कोई प्रभावशाली प्रयास ही किसी के द्वारा किया जा रहा था। यदि महर्षि दयानन्द वह कार्य न करते जो उन्होंने किए हैं, तो देश व समाज की स्थिति और कहीं अधिक विषम व जटिल होती जिसका लाभ कुछ स्वार्थी व समाज के शत्रुओं को मिलता परन्तु वैदिक धर्म व संस्कृति की अपूरणीय क्षति होती। यह निश्चित है कि हमारा देश व समाज आज जिस स्थिति में है, वह वैसा कदापि न होता अपितु कहीं अधिक पिछड़ा, कमज़ोर व विद्रूप होता। महर्षि दयानन्द ने अपनी सभी धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं से सम्बधित एक विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है जिसका नाम सत्यार्थप्रकाश है। इस ग्रन्थ में उन्होंने प्रथम 10 समुल्लासों में अपनी वेदों पर आधारित सभी मान्यताओं को प्रस्तुत किया है। इसके बाद अन्तिम चार समुल्लासों में उन्होंने देश व विदेशी मत–मतान्तरों व धर्मों की मिथ्या मान्यताओं को प्रस्तुत कर उनकी समीक्षा वा खण्डन तर्क, युक्ति, प्रमाण आदि से किया है जो कि असत्य के छोड़ने और सत्य के ग्रहण करने के लिए आवश्यक व अपरिहार्य है। यदि मनुष्य अपने असत्य को जानकर उसे छोड़ेगा नहीं तो उसका पतन तो अवश्यम्भावी है ही साथ ही उसकी धार्मिक, आत्मिक, बौद्धिक व सामाजिक उन्नति कभी नहीं हो सकती। सर्वांगीण उन्नति का एकमात्र उपाय व साधन सत्य को ग्रहण करना व असत्य को छोड़ना है और इसके लिए अपने व दूसरे के असत्य का खण्डन व अपने व दूसरों के सत्य का मण्डन व प्रशंसा भी आवश्यक है।

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के ग्यारहवें समुल्लास में आर्यावर्त्तीय अर्थात् भारत के मत–मतान्तरों का खण्डन–मण्डन है। मनुष्य की उन्नति के लिए यह खण्डन व मण्डन अनिवार्य व अपरिहार्य है। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं। कि जैसे एक अध्यापक अपने शिष्य व विद्यार्थी को सत्य बातों का ज्ञान कराता है और उसके जीवन में जो असत्य आचरण, व्यवहार व अज्ञान है, उसे जता व बता कर उसे छुड़वाता है। डाक्टर भी रोगी को रोग के कारण बताकर उसका खानपान ठीक करने के साथ उसका आचरण व व्यवहार भी ठीक करता है और उसे औषधियां इसलिए देता है कि जिससे मिथ्या व असत्य कर्मों, – खानपान व दिनचर्या की अनियमितता आदि अवगुणों के कारण उत्पन्न रोग दूर हो जाये। मिथ्या विचारों व मान्यताओं का खण्डन–मण्डन करने से पूर्व महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास की एक अलग से मार्मिक अनुभूमिका लिखी है। वह लिखते हैं कि यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था, क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्याऽन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत (वर्तमान में धर्म) चलाया। उन सब मतों में चार मत, अर्थात् जो वेदविरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतों के मूल हैं वे क्रम से एक पीछे दूसरा तीसरा चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं है। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सबको परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो, इसलिये (महर्षि दयानन्द ने) यह ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) बनाया है।

वह आगे लिखते हैं कि जो इस (ग्यारहवें) समुल्लास में सत्य मत का मण्डन और असत्य मत का खण्डन लिखा है, वह सबको जनाना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी (महर्षि दयानन्द की) बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है उसको सब के आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है। क्योंकि गुप्त व विलुप्त हुए विज्ञान का पुनः मिलना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इस सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को देखने से सत्यासत्य मत सबको विदित हो जायगा। इसके पश्चात् सबको अपनी–अपनी समझ के अनुसार सत्य मत का ग्रहण करना और असत्य मत का छोड़ना सहज होगा। महर्षि दयानन्द जी आगे कहते है कि इनमें से जो पुराण आदि ग्रन्थों में शाखा–शाखान्तर रूप मत आर्यावर्त्त देश में चले हैं, उनका संक्षेप से गुण–दोष इस 11वें समुल्लास में दिखाया जाता है। इस मेरे कर्म से यदि पाठक उपकार न मानें तो विरोध भी न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का ही है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से वर्त्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने–कराने के लिए है, न कि वादविवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मत–मतान्तर के विवाद से जगत् में जो–जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे, उनको पक्षपातरहित विद्वज्जन जान सकते हैं।

एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात वह यहां यह भी कहते हैं कि जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तरों का परस्पर विरुद्धवाद न छूटेगा, तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष कर विद्वज्जन ईर्ष्या–द्वेष छोड़कर सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें, तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन (मत–मतान्तरों के) विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फंसा रक्खा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें, तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इसके होने की युक्ति महर्षि दयानन्द जी ने अपने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की पूर्ति पर 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' शीर्षक के अन्तर्गत दी है। खण्डन–मण्डन विषयक ग्यारहवें समुल्लास की अनुभूमिका की समाप्ति पर वह ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा एकमत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करें।

महर्षि दयानन्द जी के आशय व अभिप्राय को जान लेने के बाद अब हम लेख के शीर्षक पर संक्षिप्त विचार करते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने कार्यकाल में असत्य विचारों व मान्यताओं का खण्डन व सत्य मान्यताओं का मण्डन किया। झूठ को झूठ और सत्य को सत्य कहना क्या गलत है? हम समझते हैं कि उनके इस खण्डन कार्य को कोई निष्पक्ष व्यक्ति बुरा व गलत नहीं कह सकता। महर्षि दयानन्द ने वेद, तर्क, युक्ति व अन्य प्रमाणों के आधार पर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, बालविवाह, जन्मना जाति व्यवस्था, ऊंच–नीच, छुआ–छूत, अशिक्षा, अज्ञान, अन्धविशवास, कुरीतियों आदि का खण्डन किया। इसके साथ ही उन्होंने वेद आदि विद्या के ग्रथों के अध्ययन, संस्कृत व हिन्दी भाषा को सीखने व उसके प्रयोग करने, निराकार–सर्वशक्तिमान–सच्चिदानन्द ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना, अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि, विधवा विवाह, गुण–कर्म–स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था आदि का समर्थन किया। वह स्त्री व शूद्रों की शिक्षा व समान अधिकारों के समर्थक थे तथा सामाजिक विषमता के विरोधी थे। अतः उनका यह खण्डन व मण्डन किसी भी प्रकार से अनुचित न होकर समाजोन्नति व देशोन्नति के लिए अपरिहार्य है। महर्षि दयानन्द ने इस खण्डन व मण्डन के साथ समाज सुधार के एक नहीं अपितु सभी प्रकार के कार्य किये। स्वामीजी ने स्त्री व शूद्र आदि सबको वेदाध्ययन का अधिकार दिया जो कि विगत 5000 वर्षों से बन्द था। उन्होंने गुण–कर्म–स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था की वकालत की और जन्मना जाति व्यवस्था के विरोध सहित युवक व युवती के विवाह भी गुण–कर्म व स्वभाव पर आधारित करने की सलाह दी। आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए उन्होंने ईश्वर के सत्यस्वरूप का प्रचार किया। उनके अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्त्ता एवं एकमात्र ध्यान व उपासना के योग्य है। इन गुणों के अनुसार ही उन्होंने ईश्वर का ध्यान करने वा उसकी स्तुति–प्रार्थना–उपासना करने का प्रचार किया। महर्षि दयानन्द ने देश को प्रार्थना व स्तुति की सन्ध्योपासना, आर्याभिविनय, सोलह संस्कार कराये जाने हेतु संस्कार विधि एवं वैदिक सिद्धान्तों को जानने के लिए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि अनेक विषयों की पुस्तकें लिख कर व प्रकाशित कर प्रदान की। उनके यह सभी कार्य सुधार के प्रेरक, संवर्धक व उन्नति के कारक हैं। इन्हीं खण्डन–मण्डन व समाज सुधार के कार्यों में वेद प्रचार का कार्य भी निहित है।

वेद प्रचार का अर्थ वेदों के ज्ञान का विश्व के मानवमात्र में समान रूप से प्रचार व प्रसार है। वेदों के ज्ञान के प्रकाश से आलोकित आत्मा का अभ्युदय होकर उसे निःश्रेयस की प्राप्ति होती है जो कि संसार की अन्य किसी जीवन शैली व मत–मतान्तरों की पूजा पद्धति से सम्भव नहीं है। तर्क व युक्तियों से सिद्ध मोक्ष का वर्णन ही किसी धर्म पुस्तक में उपलब्ध नहीं होता तो फिर उनके अध्ययन व आचरण से मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकता है? इसका अनुमान तुलनात्मक अध्ययन करने पर सभी मतों के सुहृद जनों को स्वतः होता है। सामान्य पठित मनुष्यों की सहायता के लिए महर्षि दयानन्द ने ईश्वरीय ज्ञान वेदों का संस्कृत व हिन्दी भाषा में भाष्य वा सरल अनुवाद भी किया है जिसे सभी

शेष पृष्ठ 09 पर

अक्रोध

● भद्रसेन

सर्व जयत्यक्रोधः 1
चाणक्यसूत्र– 35

गुस्सा न करना ही अक्रोध है और क्रोध न करने वाला सब को अपना बना लेता है तथा सभी क्रोध न करने वाले को पसन्द करते हैं। क्रोध जहाँ अपनी इच्छा की पूर्ति या मन पसन्द न होने पर या अपना नुकसान कर देने पर आता है, वहाँ वह स्वार्थ, लोभ में अड़चन, बाधा आने पर भी उभरता है। कई बार क्रोध– ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैर–विरोध के कारण भी होता है। क्रोध में व्यक्ति विवेकहीन होकर कुछ का कुछ बोल जाता है या कर बैठता है। तभी तो कहा है– क्रोध बड़ा चण्डाल है, क्रूर, अत्याचारी है या गुस्सा–'गूं सा' और क्रोध–कोढ़ होता है। क्रोध से अनेक दोष उभरते हैं, अतएव गीता में कहा है–

क्रोध से सोच में रुकावट होती है, इस से स्मृति लड़खड़ाने लगती है और स्मृति में गड़बड आने से व्यक्ति नष्ट होता है।

क्रोधाद्भवति संमोहः संगोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रशांद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।
गीता 2,63

मनुस्मृति में क्रोध से उभरने वाले दोषों को बताते हुए कहा है,

पैशुन्यं साहसं द्रोहं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।।
मनु. 7,48

कि क्रोध के कारण ही चुगली करना, किसी की स्त्री से बलात्कार करना, द्रोह रखना, दूसरे की उन्नति और प्रशंसा से जलना, दोषों को गुण और गुणों को दोष मानना, अधर्म में धन लगाना, कठोर वचन बोलना, बिना अपराध किसी को कुछ वचन वा विशेष दण्ड देना आदि बुराइयां व्यक्ति में आ जाती हैं।

क्रोध में व्यक्ति बिना सोचे गाली निकालता है, मार–पीट करता है और हर तरह की हिंसा पर भी उतर आता है[4]।

अन्धी करोमि भुवनं बधिरी करोमि, धीरं
सचेतनचेतनतां नयामि।
कृत्यं न पश्यति न येन हितं श्रृणोति,
धीमानधीतमपि न प्रतिसंदधाति।।

क्रोधी बहुत ही अहंकारी होता है और वह दूसरों को कुछ भी नहीं समझता, अतः एकदम दूसरों का अपमान कर देता है। अतएव इसी स्थिति का सामने रख कर योगदर्शन में अक्रोध के स्थान पर यम के अन्तर्गत अहिंसा शब्द का प्रयोग किया गया है, क्योंकि क्रोध के कारण ही अधिकतः दूसरों की हिंसा, हानि की जाती है तथा दूसरों को कष्ट, दुःख दिया जाता है या अपमान किया जाता है। इसी का दूसरा नाम नृशसंता है।

नास्ति क्रोध समो वन्हिः बृद्धचाणक्य,।
किमरिभिःक्रोधोऽस्ति चेद्देहिनाम् नीति 21
कश्च धर्मः परो लोके–5',
आनृशंस्यं परो धर्मः–55,
आनृशंस्यं परोधर्मः परमार्थाच्च मे मतम्–71 महा.आरण्यक 297

नृशंस=कठोर, क्रूर ही दूसरों पर अत्याचार करते हैं और नृशंसताहीन सहानुभूति युक्त होने से ही कोई दूसरों का सहयोगी बनता है। हिंसा–कभी मन से, तो कभी मन और वाणी से, कई बार मन, वाणी तथा शरीर तीनों से की जाती है।

182, शालीमार नगर
होशियारपुर (पंजाब)–146001

☞ *पृष्ठ 08 का शेष*

महर्षि दयानन्द ने ...

को पक्षपात छोड़कर पढ़ना चाहिये। वेद ईश्वर की वाणी होने के कारण सबके लिए हितकर व सबका कल्याण करने वाली है। देश व विश्व की उन्नति का आधार मिथ्या मत–मतान्तरों का पराभव और विश्व में एक सत्य मत, जिसका पर्याय वेदमत है, का उदय होना ही हो सकता है। महर्षि दयानन्द ने जब वेद भाष्य का आरम्भ किया था तो अनुमान किया था कि जब उनका किया जाने वाला वेदभाष्य पूरा हो जायेगा तो संसार से अज्ञान तिमिर विनष्ट होकर संसार में धर्म व ज्ञान के क्षेत्र में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसको रोकने, हटाने व ढापने का सामर्थ्य किसी मत–मतान्तर के मानने वालों में नहीं होगा। आज हमें वेद ज्ञान तो उपलब्ध है परन्तु मत–मतान्तरों द्वारा फैलाये गये व फैलाये जाने वाले अज्ञान व अन्धकार को छोड़ने के लिए सुविधा भोगी व अभावग्रस्त मनुष्य तत्पर ही नहीं हो पा रहे हैं। संसार में जिसका आदि व आरम्भ होता है उसका अन्त भी अवश्य होता है। यह शाश्वत सिद्धान्त है। महाभारत काल से भोगवादी संस्कृति व जीवनशैली का आरम्भ हुआ था। आरम्भ होने के कारण इसका अन्त भी अवश्य होना ही है। वह दिन अवश्य आयेगा जब भोगवाद व मिथ्या मत–मतान्तरवाद का क्षय होगा और सत्य वैदिक धर्म का सर्वत्र आचरण व व्यवहार होगा। वह दिन महर्षि दयानन्द द्वारा आरम्भ खण्डन–मण्डन–समाज–सुधार व वेद प्रचार की सुखद परिणति का दिन होगा। हमें बस जानने में तत्पर रहना, उसे न छोड़ना और उसका यथाशक्ति प्रचार करना है जिससे लक्ष्य शीघ्र प्राप्त हो सके। इन्हीं शब्दों के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

शहीद खुशीराम

यह जुलूस नहीं निकलेगा। तब खुशीराम ने बहादुरी के साथ आगे बढ़कर कहा कि जुलूस जरूर निकलेगा और इसी रास्ते से निकलेगा। नवाब ने कहा कि यदि जुलूस आगे बढ़ा तो हम गोली चला देंगे। खुशी राम ने **कहा कि हम कायर नहीं हैं अब आगे बढ़ा कदम पीछे नहीं हटेगा! जुलूस नहीं रुकेगा! नवाब ने आकाश में गोली** चलाई, लोग डर के मारे भागने लगे परन्तु खुशीराम ने ललकार लगाई कि डरो मत, आगे बढ़ो; मरना तो सबको है फिर वीरों की भांति मरो! गीदड़ों की भांति भागना कायरता होगी! खुशीराम की दिलेरी देखकर भीड़ रुक गई। नवाब ने फिर चेतावनी दी परन्तु खुशीराम पर देशभक्ति का जज्बा सवार था। वह सीना ताने आगे बढ़ा कि हम तिरंगा झण्डा लहराएँगे, फिरंगियों को मार भगाएँगे–जो रोक सको तो रोक लो। वह आगे बढ़ा। नवाब ने गोली चलाने के आदेश दिए। गोली चली और वह हवा में नहीं चली, खुशीराम जी पर चली, पर खुशीराम को रोक न पाई। खुशीराम तिरंगा हाथ में लेकर घायल शेर की तरह दौड़ा, फिर गोली चली; लेकिन खुशीराम नहीं रुका। एक के बाद एक सात गोलियाँ उसके शरीर में समा गईं परन्तु भारत माँ का वह लाड़ला नहीं रुका और दौड़ता हुआ हीरा मण्डी चौक के उस **स्थान पर पहुँचा जहाँ तिरंगा लहराया जाना था। उसने वन्दे मातरम् का नारा बोलकर हीरा मण्डी चौक में झण्डा लहरा दिया।** अन्त में अंग्रेजों ने एक गोली उसके माथे पर मारी। इतनी गोलियाँ खाकर वह उस तिरंगे झण्डे पर बलिदान हो गया लेकिन मरने से पहले तिरंगे झण्डे को लहराकर अंग्रेजी सरकार को नीचा दिखा गया। सन् 1928 में कानपुर से छपने वाले फाँसी अंक में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने इस घटना पर प्रकाश डालते हुए इस प्रकार अपनी श्रद्धांजलि दी थी– "आठवीं गोली माथे में दायीं और नौवीं गोली बायीं ओर लगी। तब सँभलना मुश्किल हो गया और वह चिरनिद्रा में सो गया। उस दिन उसके शव के साथ लोगों का समुद्र ही उमड़ पड़ा था। तत्कालीन समाचार–पत्रों की रिपोर्ट थी कि इन लोगों की संख्या 50000 से भी अधिक थी। धन्य है वह अमर वीर खुशीराम जो अपने प्यारे तिरंगे के लिए हँसते–हँसते भारत माँ के चरणों में शहीद हो गया।"

(डी.ए.वी. के स्वतन्त्रता सेनानी से सामार)

वैदिक प्रार्थना

हिरण्मयेन पात्रोण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।
यजु.40.17

The face of Truth is covered
by a golden veil
and that is why we do not see it.

O Lord of Light, do away with this veil
to enable us to see the TRUTH
in all its resplendence and purity.

स्वर्णमय ढक्कन पड़ा है
सत्य के इस पात्रा–मुख पर,
दीखता जिससे नहीं वह।

सूर्य, तुम उसको हटा दो
दीख पाये हर किसी को
स्वच्छ, निर्मल धर्म सच्चा!

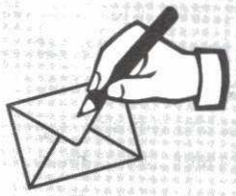

पत्र/कविता

आवश्यकता है सर्तकता की

आज लव जिहाद चर्चा में है। परन्तु आम हिन्दु और हमारे हिन्दु समाज के बच्चे, नवयुवक और नवयुवतियों अभी भी इस से अनभिज्ञ हैं। कारण हम अपने घरों में खुल कर बात नहीं कर पाते। जो मध्यम आय वर्ग है उस का सारा ध्यान एक ही बात पर और वह है बच्चों का कैरियर। जब कैरियर की बात है वहां मां–बाप और बच्चे दोनों किसी दूसरी बात पर ध्यान नहीं देना चाहतें। वे कहते हैं धर्म, समाज, देश की बात बाद में सोचेंगे, पहले कैरियर है, और आज यही देना चाहतें। वे कहते हैं, धर्म, समाज, देश की बात बाद में सोचेंगे, पहले कैरियर है, और आज यही बात हमारे हिन्दु समाज को खत्म कर रही है। जरा सोचिये, अगर आपके बच्चे ही आपके न रहे तो किस काम का है यह कैरियर। अगर आपकी बेटी, मै कहता हूं आई.ए.एस भी हो, किसी मुसलमान से शादी कर लेती है तो *एक बात निश्चित है न तो वह आपकी रही*, न आपके समाज की रही और न ही उसके और उसकी सन्तान के आपके किसी बच्चे की सन्तान से सम्बन्ध रहेंगे। यही नहीं अगर आपके लड़के ने भी किसी मुसलमान लड़की से शादी कर ली तो अधिक सम्भावना यही ही है कि वह मुसलमान बन जायेगा। कहने का अर्थ है कि किसी मुसलान से शादी के बाद आप अपने परिवार का एक सदस्य खत्म ही समझो। कारण उसकी सन्तान भी मुसलमान होगी। और जो भी मुसलमान है उसे यह पहली शिक्षा दी जाती है कि गैर मुसलमान को उसने किसी भी तरह मुसलमान बना है। लव जिलाद इसी शिक्षा का हिस्सा है।

जो कुछ बाते समझने की हैं वे मैं यहां अपनी समझ से लिख रहा हूं। इसे पढ़ कर विचार करें, और अपने बच्चों को भी पढ़ने को दें।

पहला...यह धारणा बिल्कुल गलत है कि हिन्दु और मुसलमान एक हैं। दोनों हर तरह से अलग हैं। अगर एक होते तो धर्म के अनुसार जिन्हा साहब हिन्दुस्तान को बांट कर भारत और पाकिस्तान दो देश क्यों बनवाते। मुसलमान के लिये धर्म गौण है, वह अपने धर्म के लिये कुछ भी कुर्वान कर सकता है, कैरियर तो बहुत छोटी चीज़ है। हिन्दुओं के लिये धर्म गौण नहीं बहुत बाद की चीज है।

दूसरा.....मैं यह नहीं कहता कि कौन ठीक है और कौन गलत, कोन सा अच्छा है और कौन सा बुरा पर सच्चाई यह है कि इस्लाम और हिन्दु सम्प्रदायों दोनों में स्त्री का स्थान अलग अलग है, उतना ही अलग जितना कि किसी बड़े शहर के स्लम और पॉश इलाके में रहने में फर्क है। यह भी सत्य है कि दोनों में लोग रहते हैं और अपने जीवन से खुश हैं। पर पॉश इलाके में रहने के बाद झोपड़ी में जाना बहुत मुश्किल यह अलग बात है कि भारतीय सिनेमा में यह सब सम्भव दिखता है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी बेटियों को इस फर्क से शुरु से ही वाकिफ करवायें। जब सम्बन्ध बन जाते हैं तो काफी देर हो चुकी होती है। उसे वाकिफ करवायें इस बात से कि उसके पति की तीन पत्नियां और भी हो सकती हैं। उस पर हर तरह कि पाबन्दी हो सकती है यहां तक कि वह अगर मर्दों का खेल देख ले तो उसे जेल भी हो सकती है। यही नहीं उसके और उसके बच्चों के आगे के सम्बन्ध सब मुस्लिम समाज में ही होंगे। राम, कृष्ण, गुरु नानक, दयानन्द, विवेकानंद को भूल जाना होगा क्योंकि किसी भी मुस्लिम परिवार में अल्लाह के सिवा किसी 'को मानना और उसकी पूजा करना संगीन पाप' है। उसकी सजा मृत्यु दण्ड भी हो सकती है। (blasphamy)

तीसरा.....जब तक आपके बच्चे की शादी नहीं हो जाती उसे किसी opposite sex के मुसलमान से मैत्री न करने दें। हां अपने मग में चाहे करे, पर वह भी एक दायरे में। हिन्दुओं की शादी हिन्दुओं में और मुसलमानों की मुसलमानों में हों, यही मेरी सोच है। कारण हम दोनों बिल्कुल अलग हैं और शादी शुदा हिन्दु, मुसलमान परिवार में हिन्दू के रूप में अस्विकार्य है। इसी तरह शादी शुदा मुसलमान, हिन्दु परिवार में मुसलमान के रूप अस्विकार्य है। दोनों में से किसी को धर्म बदलना ही होगा। मुसलमान तो ऐसा कर नहीं सकता, इसलिये यह हिन्दु को ही करना होगा।

चौथा......फैसबुक पर जो हमारे बच्चे हर किसी को जाने बिना दोस्ती कर रहें हैं उस पर एक नज़र और ध्यान रखने की आवश्यकता है। न जाने किसी की असलियत क्या हो? यह आप सब के सामने आया है कि किस तरह हिन्दु नाम रख कर भोली लड़कियों को फसाया जाता है। अंकुश लगाने की जगह अपने बच्चों को बतायें कि ऐसा भी हो सकता है। यह जो घटनाये समाने आ रही हैं वे तो निम्न आय वर्ग के हैं, हमारे मध्यम आय वर्ग में तो शोर मचाया ही नही जाता और बेटी की भावनाओं को ठेस न लगे, इसलिये उसे मुसलमान को सोंप दिया जाता है। और यह कर कुछ देर पर्दा डाल दिया जाता है कि उसने अपना धर्म थोड़ा ही बदला है। अरे भाई पागाल किस को बना रहे हो धर्म तो उसी समय बदल गया जब मुसलमान से शादी कर ली।

पांचवा......99 प्रतिशत मामलों में लड़कियां ऐसी शादी करके पछताती हैं। उनका जीवन बरबाद हो जाता है। कारण पति कहो या प्रियतम, उसकी दीवानगी तो कुछ समय के लिये होती है। उसके बाद मां, बाप, भाई, बहन, दूसरे रिशतेदार सब चाहिये होते हैं। खासकर जब लड़की एकदम अकेला महसूस करती है। इससे भी अधिक चोट तब लगाती है जब मियां दूसरे निकाह के बारे में सोचने लगते हैं। उसे क्या मुश्किल, उसका धर्म तो उसको कहता है। ऐसी हालत में लड़की कहीं की भी नहीं रहती। महज एक आया और अगर पढ़ी है तो सबसे अलग जीवन काटती हुई चिता में जल जाती है या कहीं दफ़ना दी जाती है।

छठा.....इस्लाम में स्त्री पर तो बहुत पाबन्दियां हैं, उदाहरण के तौर पर उसे पर्दा करना है और हर कहीं नहीं जाना। पर मर्द इन सब पाबन्दियों से स्वतन्त्र है। इस कारण आप अपनी जवान बेटियों और बहनों को किसी ऐसे स्थान–जैसे क्लब, रात्रि नाच–गाना, गरबा नाच पर न भेजें जहां मुसलमान अपनी बहनों और पत्नियों के बगैर शामिल हैं–

सातवां..... दुनिया का हर मुसलमान दूसरे सम्प्रदायों के लोगों को मुसलमान बनाना अपना धर्म सकझता है। अतः आवश्यक्ता है सतर्क रहने की।

भारतेन्दु सूद
चण्डीगढ़

****

सितम की इंतिहा क्या है

उसे यह फिक्र है हरदम, नई तर्ज़े–ज़फा' क्या है,
हमें यह शौक है, देखें सितम की इंतिहा क्या है।

गुनाहगारों में हैं शामिल, गुनाहों से नहीं वाकिफ,
सजा देते हैं वो, लेकिन खुदा जाने खता क्या है!

ये रंगे–बेकसी रंगे–जूनुं बन जाएगा गाफिल,
समझ ले यासो–हिरमां के मरज़ की इंतिहा क्या है!

चमकता है शहीदों का लहू कुदरत के पर्दे में,
शफक का हुस्न क्या है, फूल की रंगे–बका क्या है!

उम्मीदें मिल गईं मिट्टी में, दर्दे–जब्त आखिर है,
सदा–ए–गैब बतला दे मुझे हुक्मे–खुदा क्रू है!

1. अत्याचार का ढंग 2. निराशा और दुर्भाग्य
3. लालिमा 4. आकाशवाणी

–कुवर प्रताप चंद 'आजाद'
आजादी की लड़ाई के कुछ ज़बत शुदा तराने से साभार

आत्मा परमात्मा का अंश नही

साप्ताहिक आर्य जगत कि अंक दि. 23सितम्बर 12 में पृष्ठ पाँच पर स्वामी सोम्यानन्द के विचार पढ़ कर बड़ा आश्चर्य हो रहा है जो आत्मा को परमात्मा अंश बताकर वैदिक सिद्धान्त के त्रैतवाद का खंडन करते हैं। ईश्वर, आत्मा और प्रकृति तीन पृथक् अनादि सत्तायें है। इस तथ्य को ऋग्वेद का मन्त्र ''ओम् द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्व जाते'' सिद्ध करता है कि आत्मा पृथक् सत्ता है। परमात्मा का अंश नहीं है। आत्मा पशु पक्षी आदि किसी शरीर में प्रवेश करके जीवात्मा बन जाता है। आत्मा कि बिना जीव का क्या महत्व है? ईश्वर सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक है, सर्वज्ञ है। आत्मा अल्पज्ञ है न तो सर्वव्यापक है और न ही ना सर्वशक्तिमान् है। यदि आत्मा परमात्मा का अंश होता तो उसमें भी ईश्वर के गुण होने चाहियें।

देवराज आर्य मित्र
दिल्ली–64

****

हमें मिल गया, एक कुशल प्रशासक

● खुशहाल चन्द्र आर्य

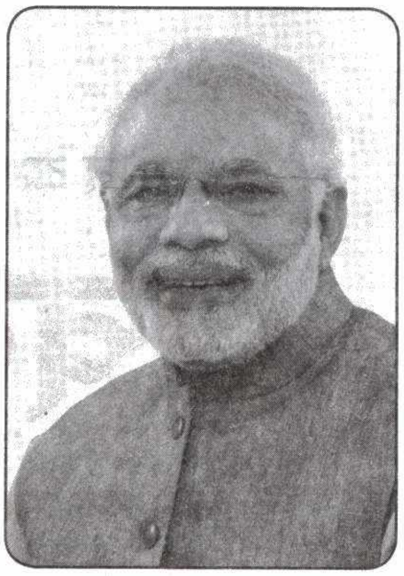

एकादश सूत्रीय अपेक्षायें –मैं अपने देश का बड़ा सौभाग्य समझता हूँ कि जिसको नरेन्द्र मोदी जैसा त्यागी, तपस्वी, निःस्वार्थी, दृढ़ निश्चयी, स्वाभिमानी, अदम्य साहसी, राष्ट्रभक्त, चरित्रवान, कर्मठ कार्यकर्त्ता व कुशल प्रशासक प्रधान–मन्त्री के रूप में मिल गया जिसके हृदय में राष्ट्र की सेवा के भाव कूट–कूट कर भरे हैं। मोदी जी ने पहले बचपन में चाय बेची, फिर आर.एस.एस. का स्वयं सेवक बने, फिर आर.एस.एस. का प्रचारक बने, और फिर बी.जे.पी. का कार्यकर्ता बने कर गुजरात का मुख्य मन्त्री बने और आज ईश्वर की कृपा से भारत के प्रधानमन्त्री के पद को सुशोभित कर रहे हैं। मोदी जी सीढ़ी–चढ़े हैं, इसलिए में सभी दुःख–सुख, गरीबी–अमीरी, खट्टे–मीठे व अच्छे–बुरे दिन देखे हैं जिससे इनका अनुभव बहुत गहन व प्रगाढ़ बन गया है। इनका जीवन–दर्शन यह बतलाता है कि इनके जीवन में ऊपर लिखे सभी गुण तो हैं ही, साथ, ही परिश्रम और परोपकार भी जीवन में भरा पड़ा है। इनको अपने खान–पान व चरित्र का भी पूरा ध्यान रहता है। ये देश का हित चाहने वाले को ही देश का सच्चा नागरिक मानते हैं। देश से जो द्रोह करता है, देश के हित को अपना हित नहीं समझता, वह चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, सिख हो या कोई अन्य सम्प्रदाय को मानने वाला हो मोदी जी, उन सब के खास विराधी हैं। उनको इस देश में रहने का कोई अधिकार नहीं, ऐसा मानते हैं। इसलिए देशद्रोही लोग मोदी जी से बहुत भय खाते हैं। मादी जी देश–हितैषी के मित्र हैं और देशद्रोही के शत्रु हैं।

मोदी जी में सबसे बड़ा गुण यह है कि जिस काम को इन्होंने अच्छा समझ लिया उसको करने में चाहे कितनी भी बड़ी आपत्ति आये करके ही रहते हैं। और जो काम देश के अहित में है उसको न तो स्वयं करेंगे और न ही दूसरों को करने देंगे। ये चाहते हैं कि प्रत्येक भारतीय अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य को समझे और उसका पालन करे, चाहे वह किसान हो, व्यापारी हो, नौकरी पेशा करने वाला हो, सरकारी ऑफिसर या बड़ा अधिकारी हो, मन्त्री हो या अन्य कोई सेवा करने वाला हो, तभी देश का विकास होगा और देश शक्तिशाली हो कर अपने देश के स्वाभिमान को बचा सकेगा। मोदी जी का कहना है कि पहले आप स्वयं मजबूत बनो और फिर दूसरों का सहयोग करो और दोस्ती का हाथ बढ़ाओ। मजबूत के ही सब मित्र बनते हैं। कमजोर का कोई मित्र नहीं बनता। मोदी जी **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** के पक्ष धर हैं। ये कहते हैं कि पूरा विश्व एक परिवार है, हमें सब ईर्ष्या व द्वेष भुला कर, मिल–जुल कर, प्रेमपूर्वक भाईचारे का व्यवहार करते हुए रहना चाहिये। मोदी जी का सिद्धान्त है कि पहले छेड़ो मत, फिर छोड़ो मत। ईश्वर की अपार कृपा से इन सभी गुणो से विभूषित, सच्चे देशभक्त, ईमानदार व अत्यन्त परिश्रमी के हाथों में देश की बागडोर आ गई है।

मान्य मोदी जी से हम कुछ अपेक्षाएं रखते हैं, जिनको इन्होंने अपने चुनाव अभियान में करने की भी कही थी। **(1) भ्रष्टाचार से मुक्त करवाना:–** काँग्रेस सरकार के समय देश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया था। देश की नस–नस में भ्रष्टाचार फैल चुका था। एम.एल.ए. सांसद, मन्त्री व सभी अफसर लोग भ्रष्टाचार में लिप्त थे। भ्रष्टाचार से महंगाई भी आसमान छू रही थी। जिससे पूरी जनता तंग आई हुई थी। मोदी जी का सबसे पहला काम भ्रष्टाचार के कारण, रिश्वत खोरी, अधिक मुनाका, अनुशासन हीनता, कर्त्तव्य के प्रति लापरवाही आदि हैं, उनके ऊपर ध्यान देना।

(2) देश के स्वाभिमान की रक्षा करना:– इसके लिए मोदी जी को देश शक्तिशाली बनाना पड़ेगा। देश का चहुँमुखी विकास करके विश्व के सामने भारत को एक अद्भुत शक्ति के रूप में खड़ा करना पड़ेगा, जिसके लिए मोदी जी सचेष्ट हैं।

(3) महंगाई को काबू में करना:– इस समय देश में जो सब से बड़ी समस्या है, वह महंगाई है। इससे सारी जनता तंग आई हुई है। मोदी जी को देश से भ्रष्टाचार समाप्त करना होगा, सरकारी खर्चे कम करने होंगे। रिश्वत खोरी बन्द करनी होगी, सिंचाई के साधन बढ़ाने होंगे जमा खोरी बन्द करनी होगी, नागरिकों में राष्ट्रीय भाव जागृत करना होगा तब कहीं महंगाई रुक सकती है।

(4) बाहर का काला धन देश में लाना:– यह मांग बाबा रामदेव ने कई वर्षो से उठा रखी है परन्तु काँग्रेस के ही बहुत से नेताओं का काला धन विदेशों में जमा है। विशेष कर स्विट्जरलैण्ड में। जिनके हाथों में काला धन लाने की जिम्मेवारी है उन्हीं का कालाधन विदेशों मे जमा हो तो कैसे काला धन बाहर से आयेगा। अब बी.जे.पी. की पूर्ण बहुमत की सरकार है, मोदी जी जैसा कठोर और ईमानदार व्यक्ति प्रधान मन्त्री है। अब आशा है कि काला धन ज़रूर–ज़रूर ही आ जायेगा। काला धन आने से बहुत सी समस्याएँ स्वयं ही समाप्त हो जायेंगी और देश समृद्धिशाली बन जायेगा।

(5) मजदूर और किसानों की स्थिति में सुधार:– देश में किसानों और मजदूरों की स्थिति बड़ी शोचनीय है। इनकी समस्या हल किये बगैर देश उन्नति कभी नहीं कर सकता। ये दोनों समुदाय देश की नींव हैं। इनका सुधार हुए बिना देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए इनकी तरफ विशेष ध्यान देना होगा।

(6) व्यापारियों को सहयोग देने की आवश्यकता:– किसी भी देश की उन्नति व सम्पन्नता के लिए देश में कल कारखाने, मिलें और व्यापार ऊँचे स्तर पर होना जरूरी है। इसके लिए सरकार को व्यापार में रियायतें व छूट अधिक देनी पड़ेगी जिससे व्यापारी अपना व्यापार और अधिक बढ़ा सकें। मोदी जी के गुजरात में मुख्य मन्त्री रहते हुए व्यापारी वर्ग उनसे बहुत खुश था, इसलिए मोदी जी के पास व्यापारियों को प्रसन्न रखने की कला है। अब उनके राज्य में देश भर के व्यापारी बड़े खुश रहेंगे। ऐसी सभी को आशा है।

शिक्षा में सुधार:– इस समय देश पश्चिमी सभ्यता की तरफ बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। देश में इंग्लिश मीडियम के स्कूल बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं। गरीब घरों के बच्चे भी अंग्रेज़ी मीडियम स्कूलों में पढ़ रहे हैं, चाहे घर वाले ऋण लेकर बच्चों को पढ़ाते है। आज का युवक दिशाहीन बना हुआ है और पश्चिमी देशों की तरफ भाग रहा है। यह देश का दुर्भाग्य है। मोदी जी की सरकार को हिन्दी मीडियम के स्कूलों को आकर्षक बनाना होगा। टी.वी. और फिल्मों के माध्यम से इसके महत्व को बताना होगा और गुरुकुलों की प्राचीन पद्धति को देश में पुनः लाना होगा।

(8) देश में एकता बनाये रखना:– देश में एकता का होना बहुत जरूरी है। जो नागरिक देश का हितैषी है, वही सच्चा नागरिक है और उसी को देश में रहने का अधिकार है और जो देश का द्रोही है, देश को हानि पहुँचाना चाहता है वह देश का सच्चा नागरिक नहीं है। उसको देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है। वह चाहे किसी भी धर्म, सम्प्रदाय व किसी भी प्रान्त का क्यों न हो। इस फार्मूले को सखती से अपनाया जाये तभी सभी नागरिक देश हितैषी होंगे और सब में एकता और प्रेम बना रहेगा। यदि तुष्टिकरण की नीति रही तो देश में एकता कभी नहीं आ सकेगी। काँग्रेस की इसी गलती से देश संगठित नहीं हो सका और पतन की ओर चला गया।

(9) धर्मपरिवर्तन पर रोक:– अभी तक देश में ईसाई और मुसलमान, लोभ, लालच व भय से गरीब व आदिवासी हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करके ईसाई वा मुसलमान बना रहे थे जिससे हिन्दू दिन–प्रतिदिन घटते जा रहे थे। इस पर रोक लगाना बहुत ज़रूरी है। कोई व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से किसी धर्म को अच्छा समझकर उसे ग्रहण करता है इसमें कोई दोष नहीं। परन्तु लोभ, लालच व भय दिखलाकर किसी का भी धर्म परिवर्तन करना भारी ज़ुल्म समझा जाये और उसे दण्डित किया जाये। ऐसा कानून अब ज़रूर–ज़रूर बनना चाहिए।

(10) स्वदेशी सामान को बढ़ावा देना:– देश की उन्नति व समृद्धि के लिए प्रत्येक भारतीय को देश में बने सामान का ही प्रयोग करना चाहिए और विदेशी सामान का प्रयोग तभी करना चाहिए जब वह चीज़ देश में न बनती हो। यह भावना देश की उन्नति व समृद्धि के लिए बहुत जरूरी है।

(11) गोरक्षा का होना जरूरी:– जबसे देश के किसानों को केमिकल से बनी यूरिया खाद उपलब्ध करायी गई तभी से अनाज विषैला और भूमि बंजर होती जा रही है और देश का स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। इसका इलाज गऊ के गोबर व मूत्र से बनी जैविक खाद का प्रयोग ही है। पंचगव्यों का प्रयोग और उन्हीं से बनी दवाइयों का प्रयोग देश के स्वास्थ्य और उन्नति के लिए अति आवश्यक है। इसलिए गो–रक्षा का होना ज़रूरी है।

वैसे तो और भी कई बातें हैं। पर इन ग्यारह बिन्दुओं का होना बहुत ज़रूरी है। इसलिए इन पर चलना प्रत्येक भारतीय का नैतिक कर्त्तव्य है । साथ ही सरकार को पूर्ण सहयोग देना भी ज़रूरी है जिससे देश बहुत शीघ्र ही उन्नत होकर विश्व में अपना एक स्थान बना सके।

180 महात्मा गांधी रोड़ (दोतल्ला)
कोलकत्ता–700007
मो.:– 22183825

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 05-06/8/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

with best Compliments

समस्त देश वासियों को

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

हम सब मिलकर देश की
स्वतंत्रता को बनाए रखने का संकल्प लें।

DAV PUBLIC SCHOOL SRESHTHA VIHAR STANDS FIRST IN

100% RESULT

QPI 84.88 among all DAVs in Delhi

NO. OF STUDENTS APPEARED [357]
NO. OF STUDENTS PASSED [357]
HIGHEST PERCENTAGE [97.20%]
NO. OF 1ST DIVISIONS [356]
NO. OF 2ND DIVISIONS [1]
TOTAL NO OF A1 & A2 [1148]
TOTAL NO OF B1 & B2 [403]
STUDENTS SECURING ONLY A1 GRADE [54]
STUDENTS SECURING ONLY A1 & A2 GRADES [115]
STUDENTS SECURING DISTINCTIONS in 5 SUBJECTS [164]
STUDENTS SECURING 100 % MARKS IN SUBJECT [8]

No. of students securing 95% and above 50

SCHOOL TOPPERS 12TH

SUBJECT WISE HIGHEST MARKS OBTAINED, SESSION 2014-15

SUBJECT	MARKS
Business Studies	100
Accountancy	100
Computer Science	100
Economics	99
Mathematics	99
Chemistry	99
Biotechnology	99
Physics	98
Biology	98
Entrepreneurship	98
English Core	98
Physical Education	97
History	95
Political Science	95
Fashion Studies	94

No. of students securing 90% and above 134

DAV PUBLIC SCHOOL
SRESHTHA VIHAR DELHI
Web site - www.davsreshtha.com
E-mail - davsvd@hotmail.com
Tel - 011 - 22144102 / Fax - 011 - 22165398

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**

SCANNED
AUG 2015